राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 189
कयामत
नागराज और परमाणु
एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

शायद आज का सूरज ही वह दिन देखेगा, जिस दिन नष्ट होगा पृथ्वी पर का सारा जीवन, और जिस दिन दुनिया पर टूटेगी...
कयामत
संजय गुप्ता की पेशकश
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले, विनोद
सुलेख एवं रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता
मुझे इससे यह उगलवाने दो परमाणु कि इस तबाही को कैसे रोका जा सकता है! क्योंकि यही 'मुखौटा' इस तबाही का जिम्मेदार है, और यही तरीका बता सकता है संसार पर टूटी इस क़यामत को रोकने का!
संसार पर कयामत टूटती है तो टूटे नागराज! लेकिन मैं इस शख्स का बाल भी बांका नहीं होने दूंगा! क्योंकि इसकी जान का रखवाला है परमाणु!

महानगर के सागर की लहरों पर कई तरह की हलचलें होती रहती हैं—
आज तुमको इतनी रात को 'स्टीमर-भ्रमण' की क्या सूझी, देवू? चारों तरफ दूर-दूर तक कोई नहीं है। अगर हम डूबने लगे तो बचाने वाला भी कोई नहीं है!
यही तो प्लान है रीमा! आज मैं तुमसे प्रपोज करने वाला हूं! शादी के लिए!
और अगर तुमने इंकार किया तो हम दोनों बिना टाइम वेस्ट किए यहीं डूब मरेंगे! सुनसान में!
देवू! सामने देखो! हवा में!
ओ माई गॉड! ये रोशनियां कैसी चमक रही हैं! बीच में कोई छेद सा भी नजर आ रहा है!
ये आखिर है...
क्याऽऽऽ?
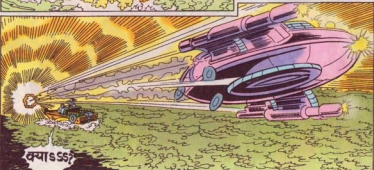
अजीब से रंग का धुआं छोड़ती हुई वह रहस्यमय उड़नतश्तरी किसी टूटे पंख वाली चिड़िया की तरह गिरकर पानी में समाती चली गई–
ढ़ढ़ढ़ड़ड़प
व... व्हाट वॉज़ दैट देवू ?
मुझे क्या पता कि वह क्या था ? लेकिन मैंने सुना है कि दूसरे ग्रहों से उड़नतश्तरियां पृथ्वी पर आती हैं, और यहां के लोगों को उठाकर ले जाती हैं ?
उठाकर ले जाती हैं ? व्हाट फॉर ? किसलिए ?
बर्तन धुलवाने के लिए ! अरे, मुझे क्या पता स्टूपिड ? मुझे कभी ले गए होते तो पता होता !
लुक, देवू ! कु... कुछ पानी से बाहर आ रहा है ?
नागराज !
कहां है, नागराज ? आ, नागराज, तेरी मौत का फरिश्ता आया है !
भागो !
देवू ! मुझसे प्रपोज तो करलो !
अब किसी भीड़ भरी जगह पर प्रपोज करूंगा ! लोकल ट्रेन में !

मैं इतने वर्षों तक कैद में रहने के बावजूद नागराज पर नजर रखे हुए था! और मेरी जानकारी के मुताबिक नागराज इसी शहर में रहता है! महानगर में! लेकिन... मेरी तरंगें उसे ढूंढ क्यों नहीं पा रही हैं! शायद इस वक्त वह इस शहर में नहीं है। लेकिन वह इस पृथ्वी पर तो है न! वह जहां कहीं भी होगा, मेरी तरंगें उसे ढूंढ ही लेंगी...

... ठीक वैसे ही जैसे मौत सबको ढूंढ लेती है! मौत से कोई कभी नहीं छिप पाया!

नागराज को अगर महानगर पर उतरने वाली इस मुसीबत का जरा सा भी आभास होता-

तो वह दिल्ली के लिए कभी रवाना नहीं होता-

मेरी जान! चलो 'न' से गाओ!
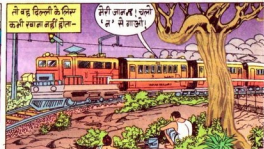
वो... वो, बच्चो, मैं कभी-कभी आवाज बदलकर भी बोलता हूं!

नागू, नागू! सुधर जा! चुपचाप बैठना सीख, वर्ना तू किसी दिन मेरा भेद खोल देगा!

25
क्या करूं नागराज? जब भी फिल्म और फिल्मी गानों का जिक्र आता है, मेरा दिल और जुबान 'खुजलाने लगते हैं! अच्छा, अब नहीं बोलूंगा!
'न'... 'न' से सुना रहा हूं भाई! थोड़ा टाइम तो दीन!
ऐ! धीरे- धीरे काउंट करो!
हां हां! याद आ गया!
वन...
टू...
थ्री...
फोर...
नागराज ऽऽऽ जय नागराज... शैतानों के बदने लगे जब- जब अत्याचाऽऽर मजलूमों के दिल से ये ही आती है पुकार नागराज नागराज
ऐ, ऐ! अपने मन से बनाए गाने नहीं चलेंगे! बेईमानी मत कर!
अपने मन से नहीं बनाया! ये 'नागराज टी. वी. सीरियल' का टाइटिल सांग है!
नागराज पर सीरियल बन गया है! कब? हमको तो पता ही नहीं चला!
ये हवा मार रहा है! तू भी किस गपोड़ी के चक्कर में आ गई! ऐ, दूसरा गाना सुना, वर्ना हार मान!
मैं हार क्यों मानूं? सीरियल बना है, बना है, तो बना है! राज भइया, आप ही इनको बताइए न!
बच्ची, मैंने भी ऐसा कुछ सुना तो है! और ये गाना भी सुना है! तुम्हारे वेदाचार्य धाम का कुक बंसीधर कहीं से इसकी कैसेट ले आया था, उसी ने सुनाया था!
हां! और तभी ये गाना मैंने भी सुना!
अब बोल, कौन जीता और कौन हारा?

चल मान लिया! लेकिन ये तो सीरियल का गाना है! फिल्म का नहीं है! ये नहीं चलेगा!
क्यों नहीं चलेगा! तूने 'हो गई तेरी बल्ले-बल्ले' गाया था, तो मैंने कुछ कहा था?
तुम्हें तभी कहना चाहिए था!
ओ॰के॰! ओ॰के॰! झगड़ा बंद करो! ये अंताक्षरी 'टाई' हो गई! बराबरी पर समाप्त हो गई!
अब हमारी यात्रा भी समाप्त होने वाली है! हम दिल्ली पहुंचने वाले हैं! अपने-अपने सामान बांध लो!
26
हमारे पास आराम करने का वक्त नहीं है बच्चो! जिस शंकर पेंटिंग कंपीटिशन में भाग लेने तुम लोग दिल्ली आए हो, वह दो घंटे बाद ही शुरू होने वाला है! याद रखना, पहला इनाम वेदाचार्य भविष्य धाम के किसी बच्चे को ही मिलना चाहिए!
हम पहला इनाम भी जीतेंगे, और दूसरा, तीसरा और चौथा भी! सारे इनाम जीतेंगे!
दैट्स द स्पिरिट! अब अपने-अपने सामान उठाओ! ट्रेन स्टेशन पर पहुंचने वाली है!
तभी एकाएक-
आऽऽऽह!
क्या हुआ, राज?
पता नहीं, आरती... मैडम! एकाएक ऐसा लगा जैसे दिमाग से किसी ने बिजली का नंगा तार छुआ दिया हो!
नागराज के इस एहसास का कारण-

दिल्ली से दूर महानगर में मौजूद था-
अहाहाहा! मिल गया नागराज! शायद उसे मेरे आने की खबर मिल गई थी, इसीलिए वह डरकर भाग रहा था! लेकिन अब कहां भागेगा? जिन्दगी की दौड़ तो एक ही जगह पर जाकर खत्म होती है। मौत की घाटी पर!
आओ, बच्चो! वर्ना उतरने वालों की भीड़ बढ़ जाएगी! और हमको होटल पहुंचने में देर हो जाएगी!
लेकिन... लेकिन राज भइया...
क्या हुआ? कुछ खो गया क्या?
पीछे तो कोई है ही नहीं राज भइया! पूरा डिब्बा खाली है!
ये कैसे हो सकता है! चलती ट्रेन से तो कोई उतर नहीं सकता। इस ट्रेन के डिब्बे अंदर से भी जुड़े हुए हैं! उतरने वाले किसी दूसरे डिब्बे में चले गए होंगे!
तभी-
अरे! अचानक अंधेरा कैसे हो गया?
डरो नहीं शामू! ट्रेन सुरंग से गुजर रही है! इसी सुरंग के बाद स्टेशन आता है!
लेकिन डिब्बे की लाइटें भी तो ऑफ हो गई हैं! वो कैसे?
कुछ पलों तक सन्नाटा छाया रहा-
सारे के सारे?
और फिर एक तेज चमक से सबकी आंखें चौंधियां गईं-
देखा! आ गई न ट्रेन टनेल से बाहर! तुम बेकार ही डर रहे थे!

ट्रेन की गति भी कम हो रही है! यानी स्टेशन आ गया है, और ट्रेन रुक रही है! पर इस चमक के कारण तो बाहर कुछ नजर ही नहीं आ रहा है! ये चमक है किस चीज की? और... और ये चमक हमारे पास क्यों आती जा रही है?

हे देव काल... मेरा मतलब है भगवान! हमारा डिब्बा न जाने कैसे ट्रेन से अलग होकर इस बिगड़े सांड जैसे इंजन के रास्ते पर आकर खड़ा हो गया था!
पर... हम तो स्टेशन पहुंचने वाले थे! यह जगह कम से कम स्टेशन तो नहीं है!
रेलवे का जंक-यार्ड लग रही है!
वह इंजन रुक गया है। मैं अभी उस इंजन के ड्राइवर से जाकर पूछता हूं कि आखिर हम हैं कहां पर?
लेकिन भइया, मैंने तो कूदते वक्त देखा था!
क्या देखा था?
यही कि इंजन में तो कोई ड्राइवर है ही नहीं!
ये क्या हो रहा है? पहले मेरे दिमाग में करेंट सा लगा! फिर डिब्बे के सारे दूसरे यात्री गायब हो गए, और हमारा डिब्बा ट्रेन से कटकर इस बिना ड्राइवर वाले इंजन के सामने आकर खड़ा हो गया। यह सब अपने-आप तो नहीं हो सकता। कोई बड़ी शक्ति है इन सबके पीछे। पर वह शक्ति है कौन और वह चाहती क्या है?
लेकिन हम तो पटरी पर नहीं खड़े हैं! फिर डर क्या...
इंजन अपने-आप पटरी बनाता हुआ हमारी तरफ आ रहा है! ये तो जादू है!
राज! इंजन फिर से हमारी तरफ आ रहा है!
भारती सही कह रही है। यह जादू ही है! और इस जादू से सिर्फ नागराज निबट सकता है, राज नहीं! भारती के साथ बच्चे भी उस तरफ कूद गए हैं! अब मैं धूल और भाप की आड़ में आराम से छिप कर बन सकता हूं राज से...

... नागराज! अब देखता हूं कि ये हमला हम पर क्यों हो रहा है? कौन है इसके पीछे?
दीदी! ये इंजन तो फिर से हमारे पीछे आ रहा है!
चारों तरफ पटरियां बनती जा रही हैं! यानी हम कूदकर जिस दिशा में जाएंगे, इंजन उधर ही आएगा!
अगर हम महानगर में होते दीदी तो कम से कम नागराज अंकल को तो बुला लेते! अब यहां कौन...
घबराओ मत बच्चो! महानगर हो या दुनिया का कोई भी कोना, नागराज जरूरतमंद की मदद करने जरूर पहुंचेगा!
नागराज!
वैसे तो इंजन बहुत शक्तिशाली मशीन होती है, लेकिन इसकी एक बहुत बड़ी कमजोरी भी होती है! ...
... और वो ये कि ये पटरियों के अलावा और कहीं नहीं चल सकता!
नागराज के हाथ, लोहे की पटरियों पर कस गए-
और इंजन अपना संतुलन और दिशा, दोनों ही खो बैठा-

और तेज गति से हुई उस टक्कर ने इंजन के सारे पुर्जे बिखेर दिए-
कड़ड़ड़ड़ड़म
चलो! इस बिना ड्राइवर के इंजन का आतंक तो समाप्त हुआ! अब पता यह करना है कि इस हादसे के पीछे कौन है और उसका मकसद क्या है।
यह जानने में नागराज को अभी वक्त लगाना था। क्योंकि वह शख्स वहां से दूर मुस्कुरा रहा था-
ही ही ही! इंजन को तोड़कर बड़ा तीसमार खां बन रहा है नागराज! लेकिन अभी तेरी मुसीबतें खत्म नहीं हुई हैं। वे तो तेरी मौत के साथ ही खत्म होंगी!
लेकिन हमारे राज भइया कहां गए? वे कहीं नजर नहीं आ रहे हैं!
खैर, राज को तो हम ढूंढ ही लेंगे! लेकिन उससे पहले इन घटनाओं का कारण जानना बहुत जरूरी है।
वर्ना हमारे साथ-साथ इन बच्चों की जान भी खतरे में पड़ जाएगी!
कारण भी पता चलेगा, और उस 'कारण' को इसकी सजा भी जरूर मिलेगी!
नागराज! देखो! इंजन के टूटे टुकड़े अपने-आप उछल-उछलकर फिर से जुड़ रहे हैं!
सचमुच! लेकिन...लेकिन इस बार ये इंजन के आकार में नहीं जुड़ रहे हैं! इनका रूप कुछ और ही बन रहा है!
सबकी विस्फारित आंखों के सामने इंजन के पुर्जे एक नए आकार में जुड़ते चले गए-

और इंजन का एक नया विनाशकारी रूप, नागराज के सामने खड़ा हो गया–
ठक
ठक
ठक
ठक
ठक
ओ माई गॉड! यह क्या चीज है नागराज? और... इस आकार में जुड़ कैसे गया?
मेरे ख्याल से यह किसी किस्म का जादू है भारती!
और जहां तक 'क्या चीज' का सवाल है तो लोकोमोटिव इंजन से बनी इस विनाशकारी आकृति को तुम लोकोमोटो कह सकती हो!
तुम बच्चों को लेकर यहां से तुरंत निकल जाओ! उनको नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए!

चलो, बच्चो! तुम मेरे साथ आओ!
लेकिन पहले राज भइया को तो ढूंढ लो दीदी!
मैंने नागराज को अपने होटल का पता बता दिया है। वह राज को ढूंढकर वहीं पर भेज देगा।
तुम लोग राज भइया की चिन्ता मत करो।
बच्चों को वहां से भेज देने के बाद नागराज, निश्चिंत हो गया था-
यह खतरनाक तो जरूर लग रहा है, लेकिन मैं इसको वार करने का मौका ही नहीं दूंगा। यह एक बार इंजन के रूप में टूट चुका है! यानी मैं इसको दुबारा भी तोड़ सकता हूं! और इसको तोड़ने का सबसे आसान तरीका, इसको नीचे गिराना है!
लोकोमोटो के नीचे गिरते ही, नागराज का नागशक्ति से भरा प्रहार उसके इस्पाती शरीर से आ टकराया-

नागराज के घूंसे इस्पात तक को छेद सकते थे! और एक-दो वारों में लोकोमोटो का कबाड़ बन जाना तय था-
लेकिन यह तय नहीं था-
कि नागराज को एक दो वार और करने का मौका मिलेगा भी या नहीं-
टन्नाक
'स्टीम पॉवर' से भरे हथौड़े का वार नागराज के शरीर से टकराया-
और नागराज का शरीर हवा में उड़ता हुआ लोहे के खंबे से जा टकराया-
धम
आऽऽऽह! मैं तो भूल ही गया था कि लोकोमोटो, स्टीम इंजन का ही बदला हुआ रूप है! और इसके अन्दर भाप की वह प्रचंड शक्ति भरी हुई है, जो उस पूरी ट्रेन को खींच सकती है, जिसमें मेरे जैसे वजन वाले सैकड़ों लोग बैठे होते हैं!
धम
इस पर शारीरिक शक्ति को आजमाना बेकार है! इसको 'ध्वंसक सर्पों' की मदद से तोड़ना होगा!
अगर लोकोमोटो जादुई था, तो ध्वंसक सर्प भी दिव्य शक्ति से युक्त नागफनी सर्पों की पैदाइश थे-
और इस कारण वे जादुई लोकोमोटो को तोड़ने में सक्षम थे-
बड़ाम

जीत सामने नजर आ रही थी-
ब ड़ा म
लेकिन तभी-
नागराज को अपने हाथ, निशाने पर से हटा लेने पड़े-
आऽऽऽह! इंजन की सीटी! बहुत तेज आवाज है! मेरे कान के पर्दे फटे जा रहे हैं!
और इंजन की सीटी शांत होने से पहले ही-
नागराज की चीख शुरू हो गई-
आऊऽऽऊ! अब ये मुझे भाप से उबालना चाहता है!
आऽऽऽह! अब तो मेरे ध्वंसक सर्प भी इसके पास तक नहीं पहुंच पा रहे हैं! इस तक पहुंचने से पहले ही भाप में झुलसकर अपना दम तोड़ दे रहे हैं!
और ये फिर से अपने-आप को जोड़ता जा रहा है!

आग ही इसकी शक्ति है! और आग बन रही है, इसके पेट में दहकती भट्ठी से! अगर मैं अपनी विषफुंकार द्वारा ऑक्सीजन को इस आग तक पहुंचने से रोक सकूं, तो यह आग बुझ सकती है, और आग बननी बन्द हो सकती है!
नागराज की विषफुंकार, लोकोमोटो के पेट में स्थित, भट्ठी में जा टकराई-
और नागराज तड़प उठा-
आऽऽऽह! ये जादुई आग है! ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में बुझना तो दूर, उल्टे इसने मेरी विष फुंकार को इतना गर्म कर दिया है कि मुझे अपने फेफड़ों में भट्ठी सी जलती महसूस हो रही है!
नागराज के संभल पाने से पहले ही-
छाती पर पड़े भारी बोझ ने उसकी सांसों का आवागमन ही रोक दिया-

कहानी 19 पेज से आगे

इस अवस्था में नागराज, लीको मोटो को हिला तक नहीं पा रहा था-
आऽऽऽह! अगर मैं इस बोझ को अपने ऊपर से नहीं हटा सकता तो मुझे इसके नीचे से निकल जाना चाहिए!
अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में बदलकर!
नागराज के साथ यह एक बड़ी समस्या थी, कि वह इच्छाधारी कणों के रूप में सिर्फ तीन पलों तक ही रह सकता था! और उसके बाद उसको सामान्य रूप में आना ही पड़ता-
आऽऽऽहा! मैं एकदम ठीक वक्त पर पहुंचा हूं! अब तक की लड़ाई न देख पाने का मुझे इतना दुःख हो रहा है कि मैं बता नहीं सकता! खैर... आगे देखते हैं कि नागराज कैसे मरता है!
ठन्नन
तड़ाक
लेकिन इस कमजोरी को नागराज अपनी ताकत में भी बदल सकता था! अपने प्रकट होने की जगह को चुनकर-
नागराज ने वार तो सही किया था-
लेकिन वार असरदार नहीं था-
तड़ाक
आऽऽऽह!

और इस बार नागराज पर एक नए किस्म का वार हुआ-
आऽऽऽ ह! अब ये मुझको उबालने के बजाय भूनना चाहता है! अपने अंगारों की मदद से। लेकिन इसकी यह चाल कामयाब नहीं होगी!

क्योंकि मेरे शरीर में मौजूद शीतनाग-कुमार, अपनी बर्फीली शक्तियों से मेरे शरीर को कभी झुलसने नहीं देगा! लेकिन... लेकिन वह कुछ कर क्यों नहीं रहा है? ये आग तो अब मुझे जलन दे रही है! शीतनागकुमार! अपनी बर्फीली शक्तियों का प्रयोग करो!
मैं कर रहा हूं, नागराज! लेकिन... न जाने क्यों मेरी कोई भी बर्फीली शक्ति इस आग को बुझा नहीं पा रही है! ये आग अवश्य ही जादुई है नागराज! और ये जादू भी मामूली किस्म का नहीं है!

तो फिर मुझे इस लोकोमोटो को ही नष्ट करना पड़ेगा! शायद इसके नष्ट होते ही इसके द्वारा छोड़ी गई जादुई आग भी नष्ट हो जाए! और इसको नष्ट करने का एक बहुत कारगर रास्ता मुझे सूझ गया है!
नागराज झुलसते रहने के बावजूद भी इंजन की तरफ बढ़ रहा है! शायद इसे भी नष्ट कर दे! इसको लोकोमोटो तक पहुंचने से पहले ही रोकना होगा!

अगले ही पल आगे बढ़ता नागराज लोकोमोटी के मुंह से निकली, तेज प्रेशर वाली भाप का धक्का खाकर पीछे जा गिरा—
हशशsssss
और इस भाप में मौजूद जल-कण मेरे शरीर पर लगी आग को बुझा देंगे! क्योंकि यह भाप भी जादुई है, और जादुई आग को जादुई पानी ही बुझा सकता है!
अब, जब आग बुझ चुकी है...
आऽऽह! मुझे पता था कि मेरे आगे बढ़ने पर लोकोमोटी की यही प्रतिक्रिया होगी! वह भाप का ही वार करेगा!
...तो इसकी कमजोरी भी तो है! ये इंजन की तरह काम करता है! इसके पेट में जलती आग, इसमें भरे पानी को भाप बनाती है, और भाप इसको शक्ति देती है... लेकिन वही भाप अगर इसके अन्दर कैद होकर रह जाए तो क्या होगा?
...तो मुझे इसको नष्ट करने का तरीका सोचना पड़ेगा! और वह भी जल्दी से जल्दी! क्योंकि अब मेरी खाल भी उबले आलू के छिलके की तरह, मेरे शरीर से जुदा होने ही वाली है! इसकी भाप तो मुझे सोचने का मौका ही नहीं... अरे, हां! भाप!
भाप इसकी ताकत है!...

मैंने भाप को सिर्फ इसके मुंह से ही निकलते देखा है! यानी अगर मैं इसका मुंह कसकर बन्द रखूं, तो भाप इसके अन्दर बनती तो रहेगी, लेकिन बाहर नहीं निकल पाएगी! और उस भाप का प्रेशर इसको किसी खराब प्रेशर कुकर की तरह फाड़ देगा!

मुझे इसके मुंह को तब तक दबाए रखना है जब तक इसके फटने का अंतिम क्षण न आ जाए। मेरी पकड़ एक पल पहले भी ढीली हुई तो स्टीम को बाहर निकलने का रास्ता मिल जाएगा, और फिर यह नहीं फटेगा!

ओहऽऽऽ! हाथ झुलस रहे हैं। पर मैं इसके मुंह को छोड़ूंगा नहीं!

और लोकोमीटो के फटने का क्षण आ गया-

और उसी पल नागराज का शरीर भी इच्छाधारी कणों में बदल गया-

ओफ़! नागराज यह क्या चाल चल गया! अब अगर मैं इसकी भाप का बनना बन्द करता हूं तो यह बेजान हो जाएगा, और नागराज इसे कागज की तरह फाड़ डालेगा! और अगर भाप बनने देता हूं तो यह अपने आप फट पड़ेगा! क्या करूं?... क्या करूं?

वह 'जादूगर' सोचता ही रह गया-

अब विस्फोट सिर्फ लोकोमीटो के चिथड़े उड़ा सकता था-

नागराज के नहीं-

जादूगर शाकूरा के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: नागराज और जादूगर शाकूरा, ताजमहल की चोरी, शाकूरा का चक्रव्यूह।

दिल्ली- जो जानी जाती है, भारत की राजधानी होने के कारण! लेकिन कुछ चीजें और भी ऐसी हैं, जिनकी याद आते ही जेहन में दिल्ली का नाम कौंध उठता है! जैसे कुतुबमीनार, लालकिला, कनाट प्लेस-
और परमाणु-
ओह! कुछ लुटेरे बैंक लूटकर भाग रहे हैं! लेकिन ये परमाणु से तेज नहीं भाग सकते!
BANK
बॉस! परमाणु आ रहा है! अब क्या करें?
परमाणु हमारा तभी तक नुकसान कर सकता है जब तक हम जमीन के ऊपर हैं! एक बार हम सीवर सिस्टम में घुस जाएं तो परमाणु का बाप भी हमको नहीं ढूंढ सकता! जल्दी से कूद जाओ इसमें!
लुटेरा बनने से पहले मैं दिल्ली नगर निगम का सफाई कर्मचारी था! मुझे इस सीवर सिस्टम की एक-एक सुरंग, एक-एक मोड़ याद है!
हम किस सुरंग में हैं, इसका पता परमाणु को कभी नहीं चल सकता! और इससे होकर हम कहां पर निकलेंगे, यह भी वह कभी जान नहीं सकता!
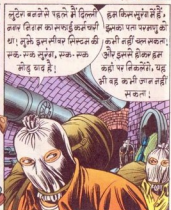
परमाणु के लिए लुटेरों को ढूंढना सचमुच में टेढ़ी खीर साबित होने वाला था-
और ये परमाणु को कुछ ही पलों में समझ में आ गया-
ये सीवर लाइन तो भूल भुलैया है! जहां जाओ, वहां से दो-तीन सुरंगें अलग-अलग दिशाओं में जाती नजर आ रही हैं! ऐसे तो मैं इन सुरंगों में ही घूमता रह जाऊंगा, और वे लुटेरे न जाने किस मेनहोल से निकल लेंगे! कैसे ढूंढूं मैं उनको?
अरे हां! एक रास्ता तो है! बल्कि कहो, कि एक ही रास्ता है!
अगले ही पल परमाणु सीवर लाइन से बाहर निकलकर-
पास की बहुमंजिली इमारत की पानी की टंकी को उखाड़ रहा था-
मेरी इस हरकत से इस बिल्डिंग के लोगों को तकलीफ तो जरूर होगी, पर सिर्फ थोड़ी देर के लिए होगी!

लेकिन यह परेशानी उस परेशानी से कम होगी, जो इन लुटेरों के भाग जाने से पैदा हो सकती है! ...
... ये लुटेरे उस गंदी नाली के कीड़े की तरह हैं, जो समाज की उन्नति का बहाव रोकते रहते हैं! इनको पानी की तेज धार से फ्लश करना होगा!
परमाणु एक के बाद एक चार पांच टंकियां उखाड़ता गया—
और उनका पानी, सीवर-सिस्टम में तेज धार के साथ भरता चला गया—
गड़ड़ड़
गड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़
अबे, अबे! ये बाढ़ कहां से आ रही है! जब हम पांच मिनट पहले सीवर में घुसे थे, तब तो सीसम एकदम साफ था!
पैसों भरे थैले मत छोड़ना! चाहे मर जाओ!
बहुत तेज धार है! पैर टिकाने तक की जगह नहीं मिल रही है! हम बहे जा रहे हैं!

Amaan
पानी, ढलान की दिशा में बहता हुआ, लुटेरों को जिस रास्ते की तरफ ले जा रहा था-
वह रास्ता, 'सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट' पर जाकर खत्म होता था-
और वहां पर उनका इंतजार कर रहा था-
परमाणु-
सीवर सिस्टम से चढ़कर बाहर निकलने के कई रास्ते हो सकते हैं! लेकिन बहकर बाहर निकलने का रास्ता सिर्फ एक ही है! ये ट्रीटमेंट प्लांट!
अब तुम लोगों का सबसे पहला काम होगा जेल जाकर नहाना!
इनके चक्कर में मैं डॉक्टर दस्तूर से मिलने में लेट हो गया हूं! आज उनसे प्रोफेसर के ऑपरेशन के बारे में फाइनल डिस्कशन करना है!

प्रोफेसर के कोमा में जाने का कारण जानने के लिए पढ़ें: सूरमा

चाहे कुछ भी हो! अगर ऑपरेशन नहीं होगा तो भी प्रोफेसर की जान को खतरा है! आज तो मैं अपनी ड्यूटी फिक्स करवा चुका हूं डॉक्टर साहब! थोड़ी देर बाद मुझे रामलीला ग्राउंड पर पहुंचना है। जहां पर शंकर पेंटिंग कंपीटिशन में हिस्सा लेने के लिए हजारों बच्चे इकट्ठा होने वाले हैं!
मैं वहां की सिक्योरिटी का इंचार्ज हूं!
लेकिन मैं कल की छुट्टी ले सकता हूं! आप कल ऑपरेशन कर सकते हैं!
ठीक है! कल सुबह दस बजे ऑपरेशन शुरू करेंगे! करीब तीन घंटे का ऑपरेशन होगा! और उसके लगभग एक घंटे बाद हमको यह पता चल जाएगा कि प्रोफेसर पर ऑपरेशन का क्या असर हुआ है!
ठीक है डॉक्टर साहब! आप तैयारी करके रखिए! मैं कल सुबह नौ बजे तक आ जाऊंगा!
रामलीला ग्राउंड आज बच्चों की किलकारियों से गूंज रहा था—

ये देखकर बहुत खुशी हो रही है राज, कि आज केबल टी॰ वी, वीडियो गेम और इंटरनेट जैसे साधनों के बावजूद भी बच्चों की ड्राइंग और पेंटिंग में इतनी रुचि है! यहां पर सात- आठ सौ से कम बच्चे नहीं होंगे!
श श श भारती! अब इस प्रतियोगिता के आर्गेनाइजर्स नियम पढ़ने जा रहे हैं!
प्यारे बच्चो! प्रतियोगिता अब से आधे घंटे बाद शुरू होगी! प्रतियोगिता के नियम एकदम सिम्पल हैं। आपको ड्राइंग एवं पेंटिंग के लिए तीन घंटे दिए जाएंगे!
हर प्रतियोगी अपनी-अपनी ड्राइंग शीट के पीछे अपना नाम, पता, स्कूल का नाम एवं फोन नंबर, अगर हो तो लिखेगा! ड्राइंग करने की सभी चीजें जैसे पेंसिल कलर वगैरह आपको खुद लाने होंगी!

और अब नियम समाप्त करते हुए... अक्!
एक मिनट! एक मिनट!
मुझे अभी- अभी याद आया! हम एक चीज देंगे! मोम वाले रंग, यानी कलर क्रेयान्स! सभी बच्चों की पेंटिंग उन क्रेयान्स से ही रंगनी होगी!
ये क्या कह रहे हैं शर्माजी? हम कुछ भी उपलब्ध नहीं कराते! और अगर कराएंगे भी तो इतने सारे क्रेयान्स के डिब्बे कहां से लाएंगे?
क्रेयान्स इधर हैं सर! सभी बच्चों के लिए एक-एक डिब्बा है!
ओ माई गॉड!
पता नहीं वर्माजी! न जाने कैसे मेरे दिमाग में बात आ गई, और मैंने बोल दिया!
मैजिक क्रेयान्स! ये नाम तो मैंने पहले कभी नहीं सुना! और... अभी-अभी तो यहां पर कुछ भी नहीं था!
नई कंपनी है सर! इसीलिए पब्लिसिटी के लिए कलर 'फ्री' बांट रही है!
ठीक है, ठीक है! हमें क्या दिक्कत है! अभी बंटवा देते हैं क्रेयान्स सारे बच्चों में!

ही ही ही! बंटवा दो, बंटवा दो! यही तो है नागराज को सामने लाने का चक्र! मुझे यहां पर नागराज की उपस्थिति का आभास हो रहा है!...

...लेकिन वह कहीं नजर नहीं आ रहा है! जरूर वह यहां पर अदृश्य रूप में मौजूद है! खैर, मेरे 'मैजिक क्रेयान्स' उसे ज्यादा देर तक अदृश्य नहीं रहने देंगे!

आज शाकुरा नागराज के खून से पेंटिंग बनाएगा!

जल्दी ही क्रेयान्स सारे बच्चों में बांट दिए गए थे-

वाऊ! कितने सुन्दर क्रेयान्स हैं! इनसे तो रंगने में मजा आ जाएगा!

चलो राज! हम कुछ पेट पूजा करके आते हैं! ये बच्चे तो तीन घंटे से पहले उठेंगे नहीं!

नहीं भारती! अभी हमको यह पता नहीं चल पाया है कि ट्रेन में हम पर हुआ हमला किसने कराया था! उस शख्स का हमला दुबारा भी हो सकता है!

मैं इंस्पेक्टर विनय हूं! यहां का सिक्योरिटी इंचार्ज! हमारे यहां पर रहते किसी भी बच्चे का बाल भी बांका नहीं होगा!

ओ, कम ऑन राज! यहां पर ऐसा कुछ नहीं होगा! फिर अगर कुछ गड़बड़ हुई भी तो यहां पर पुलिस सिक्योरिटी मौजूद है!

मैडम ठीक कह रही हैं!

इसकी पकड़ काफी मजबूत है! यह मामूली इंसान नहीं लगता है!

इस इंस्पेक्टर की आंखों में अजीब सा आत्मविश्वास है! इसके व्यक्तित्व से एक शक्ति फूट रही है! यह मामूली इंस्पेक्टर नहीं है!

इंस्पेक्टर विनय के आत्मविश्वास ने राज को भी थोड़ा सा निश्चिंत कर दिया था-
दूध छोड़ो, राज, एक टिक्की खाकर देखो! दिल्ली की चाट खाकर ही 'चाट' शब्द का मतलब पता चलता है!
दूध से अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता भारती!
हां, एक दही-भल्ला जरूर खाऊंगा! दही भी तो दूध से ही...
राज की आवाज बीच में थमकर रह गई-
आईईईई! बचाओ!
ये तो किसी बच्चे की आवाज है! मुझे इसी का डर था! खतरा यहां तक आ गया है, भारती!
और इस खतरे से राज नहीं, नागराज ही निबट सकता है!
खतरा कुछ अजीबो-गरीब रूप धर कर आया था-
ये... ये कैसी आकृति है? लगता है जैसे किसी बच्चे की ड्राइंग कापी से उठकर आ गया हो!
आईईई! ये मेरी ड्राइंग शीट से निकलकर खड़ा हो गया है!
मैंने जैसे ही इसमें कलर भर कर पूरा किया, यह खड़ा होकर पेज से बाहर निकल आया!

इस भयावह दृश्य को देखकर अधिकतर बच्चों के पैर जड़ हो गए! लेकिन जिन कुछ बच्चों ने भागने की कोशिश की-
वे भी भाग नहीं सके-
और उनके शरीर आगे की तरफ भागने के बजाय, ऊपर की तरफ बढ़ने लगे-
और जमीन से टकराकर चिथड़े-चिथड़े हो जाना भी-
बच्चों का ऊपर से नीचे गिरना भी निश्चित था-
लेकिन बच्चों के शरीर जमीन से टकरा नहीं सके-

हा हा हा! आ गया नागराज सामने! सीकड़ी का बच्चों पर जुल्म ढाना सफल रहा!... अब जुल्म ढाया जायेगा नागराज पर, और उसे देखेंगे ये बच्चे! और मैं! ही ही!
ये क्या चीज है? ये तो किसी बच्चे की ड्राइंग लग रहा है!
ये मेरी ड्राइंग ही है नागराज! न जाने कैसे रंग भरना पूरा होते ही, ये सीकड़ी, शीट से निकलकर खड़ा हो गया!
पहला वार नागराज ने किया! यह वार चट्टान तक को तोड़ सकता था-
ये भी जादू है! यानी जिसने सुबह मुझ पर और बच्चों पर हमला किया था, वह यहां पर भी मौजूद है! पर वह है कौन? खैर, ये बाद में सोचूंगा! पहले तो इस सीकड़ी पर काबू पाना ज्यादा जरूरी है!
क
लेकिन सीकड़ी का शरीर चट्टान से भी ज्यादा मजबूत था-

इंस्पेक्टर विनय पूरी स्थिति पर कड़ी नजर रख रहा था-
ये नागराज एकाएक यहां पर कहां से आ गया? खैर अब मुझे परमाणु बनने की जरूरत नहीं है! लेकिन पुलिस को भी अपना काम तो करना ही होगा!
पकड़ लो इसे!
बच्चों से भरी जगह पर गोली चलाना संभव नहीं था! शारीरिक शक्ति का प्रयोग करना ही एकमात्र रास्ता था-
फ्विटटच
लेकिन पुलिस वालों को 'सीकड़ी' की शक्ति का आभास नहीं था
ओह! इसने मेरे कांस्टेबलों को क्रियांस के खोल में कैद कर दिया है!... यह एक अद्भुत प्राणी है! मैं कुछ देर और देखूंगा! अगर तब तक नागराज इसे रोक नहीं पाया तो इसे परमाणु रोकेगा!
मैदान के एक कोने में हो रही इस लड़ाई से दूर-
मैदान के दूसरे कोने में कुछ धुनी बच्चे अभी भी अपनी पेंटिंग पूरी करने में लगे हुए थे-
वाऊ! कितना प्यारा लग रहा है?
ये पूरा हो गया मेरा 'प्रदूषण दानव'! देख लेना फर्स्ट प्राइज इसे ही मिलेगा!

लेकिन 'क्रेयॉन कलर' की आखिरी लाइन पूरी होते ही-
नागराज सींकड़ी से निपटने में इतना व्यस्त था कि वह इस नई मुसीबत को देख ही नहीं पाया-
अब यह मुंह पर भी क्रेयान का पेस्ट छोड़ रहा है। यह शर्तिया एक जादुई जीव है। इसको नष्ट करने का तरीका जादुई ही होना चाहिए। पर वह तरीका होगा क्या? और जादू फैलाने वाला शख्स आखिर है कौन?
ट्पाक्
खैर! अभी तो मैं इस क्रेयान पेस्ट का इस्तेमाल इस पर हमला करने के लिए कर सकता हूं! आम चीजें शायद इसकी नजरें बन्द न कर सकें!...
...लेकिन यह जादुई क्रेयान पेस्ट इसकी दृष्टि को रोक सकता है! और जब यह अंधा हो जाएगा तो इस पर हमला करना आसान होगा!
तड़ाक
ये... ये क्या हो रहा है? प्रदूषणदानव पूरा बनते ही पेपर से निकलकर असली का बनता जा रहा है!
अच्छा हुआ, तूने मिलें और चिमनी पूरी नहीं बनाईं! वर्ना यहां मैदान पर मिल खड़ी हो जाती!
शाबाश नागराज शाबाश! चाल तो अच्छी है। तू कुछ मिनटों तक और जी लेगा! लेकिन उस मुसीबत का क्या करेगा, जो हवा में तैरती हुई तेरे पीछे बढ़ी आ रही है!

नागराज को उसकी सर्प इंद्रिय ने पीछे से आ रहे खतरे का संकेत तो दिया-
लेकिन नागराज को बचने का मौका नहीं मिल पाया-
आआह! यह क्या है? धुएं का बना दैत्य! यह मेरा दम घोंटने के साथ-साथ मुझे कुछ देखने भी नहीं दे रहा है!
धप्प
लेकिन इस जादुई धुंए में सीकड़ी की जादुई नजरें मजे से देख रही थीं-
नागराज बेबस था, और हमला दो तरफ से हो रहा था-
नागराज को तो दिखना बन्द हो गया था-
लेकिन नागराज को ज्यादा देर तक अकेला नहीं रहना पड़ा-
परमाणु! तुम यहां पर कैसे? ओह! मैं तो भूल ही गया था कि मैं दिल्ली में हूं। और परमाणु दिल्ली में नहीं तो और कहां पर मिलेगा?
अब हम दो हैं नागराज, और ये भी दो हैं! हमको लड़ाई जीतने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा! लेकिन उससे लड़ाई जीतूं कैसे, जिस पर किरणास्त्र आर-पार हो जाएं?

यह लड़ाई सही तरीके का वार करके जीती जाएगी, परमाणु! जैसे मैं हाथ-पैरों से न टूट सकने वाले इस सीकड़ी को ध्वंसक सर्पों की मदद से तोड़ रहा हूं, वैसे ही तुम इस धुएं के दैत्य पर हवा से वार करो, जो इसको इधर-उधर छितरा कर रख देगी!
परमाणु का शरीर तेज गति से प्रदूषण दैत्य के चारों तरफ घूमकर वायु का एक तीव्र चक्रवात बनाने लगा-
समझ गया, नागराज!
अब देखो, परमाणु का कमाल!
और चक्रवात के अंदर का दबाव, प्रदूषण दैत्य के शरीर को अपने अंदर खींचता हुआ, पृथ्वी के वातावरण की ऊपरी सतह तक ले गया-
बस! इससे ऊपर जाने की मुझे जरूरत नहीं है!
क्योंकि इतनी ऊंचाई और गति काफी है...
...इस धुएं के राक्षस के शरीर को अंतरिक्ष के अंधेरों में पहुंचाने के लिए!
ओफ्! ये परमाणु कौन है और बीच में कहां से टपक पड़ा? मैं चाहूं तो प्रदूषण दैत्य को अभी वापस बुला सकता हूं। लेकिन जादुई शक्ति व्यर्थ करने का क्या फायदा! ऐसे तो कई दैत्य मेरे जादुई क्रियानों से ही बन जाएंगे!

लेकिन यह क्या? बच्चे डर गए हैं! उन्होंने चित्र बनाने बंद कर दिए हैं! चित्र बनेंगे नहीं तो नागराज को मारने के लिए कातिल कैसे पैदा होंगे। चित्र बनेंगे और जरूर बनेंगे!
उधर नागराज चकित हो रहा था-
यह क्या? मेरे ध्वंसक सर्प भी इसको तोड़ नहीं पाए! यह टूटकर जुड़ता जा रहा है!
यानी इसे तोड़ने के लिए और शक्तिशाली वार की जरूरत है नागराज!
जैसे परमाणु ब्लास्ट
लेकिन परमाणु ब्लास्ट भी सीकड़ी का कुछ बिगाड़ नहीं पाया-
ओह! अब इसका भी वही इलाज करना पड़ेगा जो धुंए वाले दानव का किया था! इसको अंतरिक्ष में छोड़कर आना पड़ेगा!
परमाणु ने सीकड़ी को उठाने की कोशिश की-
लेकिन-
यह क्या? मैं... मैं चाहूं तो एक जहाज तक को उठा सकता हूं! लेकिन यह तो अपनी जगह से हिल भी नहीं रहा है!
अगले ही पल- परमाणु को दिन में तारे नजर आने लगे-

यह जादुई आकृति है, और इसे जादू ही समाप्त कर सकता है। लेकिन ऐसा जादुई हथियार मैं लाऊंगा कहां से?
?
नागराज! ये... ये मैं क्या देख रहा हूं? जमीन पर पड़े क्रेयान्स अपने-आप चित्र बनाते जा रहे हैं!
मैं समझ गया! यानी ये क्रेयॉन जादुई हैं! इनको किसी जादूगर ने ही सप्लाई किया है! वैसे कोई भी पेंटिंग कंपिटीशन वाले प्रतियोगियों को रंग उपलब्ध नहीं कराते हैं। इससे पहले कि ये कोई खतरनाक प्राणी बनाएं, इन क्रेयान्स को नष्ट कर दो!
सांय
परमाणु के ब्लास्ट, बिना वक्त गंवाए पूरे मैदान में फैले हजारों क्रेयान्स को गलाकर नष्ट करने लगे।
लेकिन इस प्रक्रिया में समय लगना था-
और कुछ क्रेयान्स अपनी चित्रकारी पूरी कर चुके थे-
Magic CRAYONS
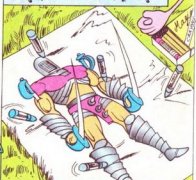
और नागराज के लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो रही थी-
आऽऽऽह! अब कौन?
खचाक
नागराज घूमा और चकित रह गया-
सांय
ओह! एक और नई मुसीबत! तलवारबाज! और यह मुझे मारने की कोशिश कर रहा है!
यानी जो भी जादूगर मुझ पर हमला कर रहा है, वह मेरी शक्तियों को जानता है! वह ये जानता है कि मेरे अंग पूरा कटने के बाद जुड़ नहीं सकते। और ऐसा जादूगर सिर्फ एक ही हो सकता है, जादूगर शाकूरा! लेकिन उसको तो उसके ग्रहवाले बन्दी बनाकर ले गए थे! वह यहां कैसे आ सकता है?
और ऐसी स्थिति में यह मैं कभी समझ नहीं पाऊंगा कि कब मुझे बचने के लिए इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना है!
जादूगर का प्लान तो स्पष्ट है! सीकडी मेरा ध्यान बंटाएगा, और तलवारबाज मुझे काटेगा!
नागराज! मैं तुम्हारी मदद को आ रहा हूं!
नहीं परमाणु! इनसे मैं निपट लूंगा! तुम क्रेयॉन्स को नष्ट करने पर ध्यान दो!

वर्ना वे ऐसे प्राणी पैदा करते रहेंगे, और हम इनसे लड़ते रहेंगे!
आऽऽऽह!
सीकड़ी मुझे तलवार की तरफ धकेल रहा है!... ये एक टीम की तरह लड़ रहे हैं!...
...लेकिन इस टीमवर्क ने मुझे एक आइडिया दे दिया है!
अगले ही पल नागराज ने जानबूझकर सीकड़ी का वार नहीं बचाया! उसका शरीर सीकड़ी की बांहों में कैद हो गया-
और इस बार अपनी तरफ बढ़ती तलवारों के पास आते ही-
नागराज का शरीर इच्छाधारी कणों में बदल गया! तलवारें उसके शरीर के साथ-साथ सीकड़ी के शरीर से भी पार हो गईं-
खच्च
खचाक
आहा! मेरा ख्याल सही निकला! जादुई सीकड़ी को जादुई तलवारों ने काट डाला है! लेकिन इस तलवार बाज का क्या करूं? इसे कौन काटेगा? अगर मैं इसकी तलवार छीन सकूं तो उससे इसे भी खत्म कर सकता हूं!
दीदी! हम नागराज की मदद करें?
नहीं बच्चों! अगर जरूरत हुई तो नागराज की मदद परमाणु करेगा!

नागराज की जल्दी ही मदद की जरूरत पड़ने वाली थी-
आऽऽऽह! तलवार छीनना तो दूर, मेरे लिए तो इसकी तलवार से बचना मुश्किल हो रहा है! कम्बख्त इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने से पहले ही वार कर देता है! लेकिन यह क्या है?
आहा! समझ गया! इस तलवारबाज को खत्म करने का रास्ता मिल गया है! जादुई रास्ता! लेकिन इससे पहले कि परमाणु सारे क्रैयॉन्स नष्ट कर दे...
...मुझे अपनी सर्प सेना को तेजी से मैदान में फैलाना होगा!
और कुछ ही पलों के बाद-
अरे, नागराज यह क्या कर रहा है? तलवारबाज के वारों से बचना छोड़कर सीधा खड़ा हो गया है! शायद यह आराम से मरना चाहता है! थक गया होगा! क्योंकि यह लाख कोशिशों के बावजूद भी शाकूरा के जादू को काट नहीं पा रहा है!
तलवारबाज आगे लपका-
और साथ ही साथ नागराज का हाथ भी लहराया-
सांय
और इशारा पाते ही-
एक सर्प हवा में लहराकर तलवारबाज को छूता हुआ निकल गया-
और सांप का 'जादुई स्पर्श' कवच को साफ करता चला गया-
तलवारबाज ने तलवार का प्रयोग करने की कोशिश की लेकिन 'जादुई स्पर्श' तलवार को भी साफ करता चला गया-
और फिर- कई सांप एक साथ तलवारबाज पर टूट पड़े, और तलवारबाज का शरीर हवा में घुलने लगा-

ये... ये क्या हो रहा है? नागराज के सांपों में ऐसी जादुई शक्ति कहां से आ गई कि वे सिर्फ छूकर मेरी जादुई ड्राइंग को नष्ट कर सकें। चक्कर कुछ और ही है! करीब से देखना पड़ेगा! इन सांपों ने मुंह में कुछ पकड़ रखा है! अरे, ये तो... ये तो मेरा जादुई क्रेयॉन है! सफेद क्रेयॉन, जो हर सांप के मुंह में है!
कमाल है, नागराज! उधर मैंने सारे क्रेयॉन नष्ट किए और इधर तुमने तलवारबाज और सीकड़ी, दोनों को ही नष्ट कर दिया! पर कैसे?
सीकड़ी को तो तलवारबाज ने ही काट डाला था! लेकिन तलवारबाज से लड़ते समय मेरी नजर एक अधूरे बने पोस्टर पर पड़ी, जिस पर एक बच्चे ने गलती से भर गए लाल रंग को सफेद क्रेयॉन से मिटाने की कोशिश की थी! सफेद शीट पर सफेद क्रेयॉन की लाइनों ने लाल रंग को गायब कर दिया था! तब मैंने सोचा कि ये तलवारबाज भी तो सफेद शीट पर बनी ड्राइंग ही है! और इसको भी सफेद क्रेयॉन की मदद से मिटाया जा सकता है!
SHANKER
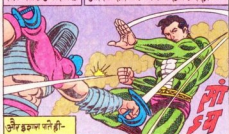
बस मैंने फटाफट अपनी सर्पसेना को सफेद क्रेयॉन चुनकर अपने मुंह में पकड़ने का आदेश दे डाला! भगवान की दया थी कि तब तक तुम उन क्रेयॉनों को नष्ट नहीं कर पाए थे! बस फिर मेरे सर्पों ने एक-एक करके तलवारबाज की आकृति की सारी लाइनें मिटा दीं, और तलवारबाज गायब हो गया!
लेकिन अब हमको अपना ध्यान उस शख्स को ढूंढने में लगाना चाहिए जिसने इन जादुई क्रेयॉनों को सप्लाई किया था!

उसको ढूंढने की जरूरत नहीं है...

क्योंकि वह शख्स इस वक्त तुम्हारी आँखों के सामने खड़ा है... सॉरी! खड़ा नहीं है! हवा में उड़ रहा है!

शाकूरा! शाकूरा ग्रह का जादूगर विक्टार शाकूरा!

मुझे शक तो हो रहा था, लेकिन तुमको तो सम्राट खाजूरा बन्दी बनाकर ले गए थे?

यह कोशिश तू दो बार कर चुका है शाकूरा, लेकिन असफल रहा है! अपनी असफलताओं से सीख ले, और वापस लौट जा अपने ग्रह पर!

मुझे जाना तो पड़ेगा ही नागराज! क्योंकि शाकूरा ग्रह के जादूगर योद्धा मेरा पीछा कर रहे हैं! लेकिन वे मुझे तब तक नहीं पकड़ पाएंगे...

विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: शाकूरा का चक्रव्यूह

शाकूरा का जादू परमाणु पर छाया-
विज्ञान का जादू! हाहाहा! तूने मुझे किससे मारा? हां... परमाणु ब्लास्ट से! जैसे परमाणु बम का होता है! अब देख, मेरे जादू का कमाल!
और परमाणु के परमाणु ब्लास्ट, उसके शरीर से निकलकर उसी के शरीर से टकराने लगे-
अरे! अरे! आऽऽऽह! यह क्या हो रहा है?
मैं अपने ही परमाणु ब्लास्टों को कंट्रोल नहीं कर पा रहा हूं!
और हर परमाणु ब्लास्ट मुझे यहां से दूर धकेलता जा रहा है-
शुक्र है कि मेरी पोशाक मुझे इन ब्लास्टों से बचा रही है! वर्ना अब तक तो मेरे चिथड़े उड़ गए होते!
एक व्यवधान तो दूर हुआ! अब तुझसे एकान्त में निबटूंगा नागराज! तू बहुत तनकर खड़ा होता है! यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है! शाकूरा के सामने लोग झुक-कर आदाब बजाते हैं! ले!

मैं तेरी कैल्शियम वाली हड्डियों को रबर का बना देता हूं! उसके बाद तू मुझे सीधा खड़ा होकर दिखा दे, तो कसम जादू की मैं जादूगरी ही छोड़ दूंगा!
अरे! अरे! इसका जादू मुझ पर पड़ते ही मेरी हड्डियां मुलायम पड़ रही हैं। ये... ये तो...
... सचमुच रबर की बन रही हैं! मैं खड़ा नहीं हो पा रहा हूं! शाकूरा में ऐसी जादुई शक्तियां कैसे आ गईं कि वह इन्सानों के शरीर तक पर अपना जादू चला सके! ऐसी जादुई शक्ति पहले तो इसके पास नहीं थी!
नागराज के जमीन पर गिरते ही-
उस पर घातक शस्त्रों की बौछार शुरू हो गई-
ओह! ये तेज धार वाले हथियार मुझे टुकड़ों-टुकड़ों में काट देंगे!
ये तो शुक्र है कि अपने शरीर के सर्पों के कारण मैं अभी भी अपने शरीर को थोड़ा बहुत हिलाकर बच सकता हूं!
लेकिन कब तक?

मौत, नागराज के करीब से बार-बार गुजर रही थी-
और उधर परमाणु भी मौत से ज्यादा दूर नहीं था-
ओफ! अब तो मेरे ब्लास्ट मेरी पोशाक तक को तोड़ने लगे हैं। बगैर अपनी पोशाक के मैं तो एक भी 'ब्लास्ट' झेल नहीं पाऊंगा!... ...प्रोबॉट! यह क्या हो रहा है? मैं अपने ब्लास्टों को कंट्रोल क्यों नहीं कर पा रहा हूं?
परमाणु पर पल-प्रतिपल नजर रखे हुए प्रोबॉट ने अब तक स्थिति का विश्लेषण कर लिया था-
इस बौने शाकुरा ने तुम पर किसी विचित्र ऊर्जा का वार किया है! परमाणु! ऊर्जा की इस किस्म के बारे में तो मैं कुछ नहीं जान पाया हूं, लेकिन इतना जरूर पता चल गया है कि इस ऊर्जा ने तुम्हारी पोशाक में लगे 'मिनी न्यूक्लियर रिएक्टर' की प्रक्रिया को अनियंत्रित कर दिया है! और इसी कारण से ब्लास्ट बार-बार छूट रहे हैं!
ANALYSIS
लेकिन ये तुम्हारे शरीर से वापस आकर क्यों टकरा रहे हैं, यह मैं भी नहीं समझ पा रहा हूं!
ये जादुई ऊर्जा है, प्रोबॉट! विज्ञान अभी तक इसका विश्लेषण नहीं कर पाया है! तुम तो बस ये बताओ कि मैं ब्लास्टों से कैसे बच सकता हूं?
तुम अपने मिनी रिएक्टर को बन्द कर सकते हो, लेकिन उससे तुम्हारी कई शक्तियां खत्म हो जाएंगी! तुम सिर्फ उड़ सकोगे! तुम्हारी सुपर शक्ति भी खत्म हो जाएगी!

सुपर शक्ति से पहले तो मैं खत्म हो जाऊंगा! तरीका बताओ प्रोबॉट! जल्दी!
अपनी बेल्ट में लगे गोल बक्कल को खोलो! उसके अन्दर एक लाल स्विच है! उसे दबा दोगे तो आणविक प्रकिया रुक जाएगी! दुबारा दबाओगे, तो फिर चालू हो जाएगी!
परमाणु ने एक भी पल व्यर्थ नहीं किया-
स्विच दबते ही एटॉमिक ब्लास्ट रुक गए-
कट
एक बात और परमाणु! मैंने उस बौने शैतान के शरीर तक आती हुई... या जाती हुई जादुई ऊर्जा की एक लहर भी अपने स्कैनर पर देखी है!
और वह महानगर की दिशा से आ रही है!
महानगर की दिशा से! शाकूरा नागराज की तलाश में आया है और नागराज तो महानगर में ही रहता है! और शाकूरा नागराज से यह भी कह रहा था कि वह इस बार शाकूरा ग्रह की सारी जादुई शक्ति लेकर आया है! कहीं वह शक्ति महानगर में ही तो नहीं है?...
...हो सकती है! वह जादुई लहर महानगर में कहां से आ या जा रही है प्रोबॉट?
महानगर के चंद्राक्रीक के पास से!... मैं तुम्हारे दिमाग में उस जगह का नक्शा भर देता हूं!
आहा! समझ गया मैं कि वह जगह कौन सी है? उड़ने की शक्ति अभी भी मेरे पास है! क्योंकि उसके लिए मैं एंटी-ग्रेविटी इस्तेमाल करता हूं, आणविक ऊर्जा नहीं! मैं उड़कर कुछ ही मिनटों में महानगर के चंद्राक्रीक तक पहुंच सकता हूं!

परमाणु महानगर की तरफ रवाना हो रहा था, और दिल्ली में नागराज मौत से जूझ रहा था–
बचते रहना समस्या का समाधान नहीं है! मुझे वार करना होगा! मैं खड़ा नहीं हो सकता, लेकिन अपने शरीर के सर्पों को तो अभी भी बाहर निकाल सकता हूं!
सौडांगी! शीतनाग कुमार बाहर आओ!
नागराज ने आदेश तो दिया था–
लेकिन–
हम तुम्हारे आदेश का पालन करने में असमर्थ हैं नागराज! इस दुष्ट बौने के जादू ने तुम्हारे साथ-साथ हम सभी के शरीर की हड्डियों को भी रबर का बना दिया है!
हम थोड़ा बहुत तो हिल सकते हैं, लेकिन बाहर निकलने के लिए अपने शरीर को गति नहीं दे पा रहे हैं!
ओह! मेरी सर्प सेना फिलहाल बेकार है! यानी अगर इस वक्त मेरे शरीर पर कोई घाव भी लगा तो उसको भी शायद मेरी सर्प-सेना न भर पाए। मुझे खुद ही कुछ करना होगा! मेरे सर्प थोड़ा बहुत हिल पा रहे हैं, और इसी कारण मैं भी थोड़ा बहुत हिल पा रहा हूं! इसका फायदा उठाना होगा!
नागराज ने अपने शरीर को गेंद सा गोल कर लिया–
और फिर लचीले हाथों की एक हरकत से नागराज का शरीर, टप्पे खाता हुआ, शाकूरा के शरीर से जा टकराया–
धमम
ओह! ये तो फुटबॉल... नहीं नहीं... नागबॉल बनकर मुझे मार रहा है!... मैं एक साथ एक ही व्यक्ति पर दो तरह के जादू का वार नहीं कर सकता!

तभी नागराज की नजर, मैदान में एक कोने पर पड़ी—
अरे! यह भारती मुझे क्या इशारा कर रही है? इसने जमीन पर कुछ बनाया हुआ है! यह तो किसी किस्म का तिलिस्म लगता है, और भारती मुझे शाकूरा को इस तिलिस्म के बीच में डालने का इशारा कर रही है! समझ गया ··· न जाने क्यों, मैं हमेशा भूल जाता हूं कि भारती, महान तिलिस्म विशेषज्ञ दादा वेदाचार्य की पोती है! छोटा-मोटा तिलिस्म बनाना तो यह खुद भी जानती है!
नागराज शाकूरा को तिलिस्म की तरफ धकेलने की पुरजोर कोशिश करने लगा—
और उधर परमाणु चंद्राक्रीक के समुद्र तल की खाक छान रहा था—
ये स्पेस शिप! यह जरूर शाकूरा की ही होगी! और इसी में ऐसा कुछ मौजूद है, जो शाकूरा की भीषण जादुई शक्तियां प्रेषित कर रहा है। इसे नष्ट कर देना चाहिए या नहीं? कहीं इसको नष्ट करने से उल्टा असर न हो जाए। जादुई शक्तियां आजाद हो जाएं, और शाकूरा और शक्तिशाली हो जाए!
एक रास्ता है! अगर मैं इस स्पेस शिप को शाकूरा तक ले जा सकूं तो उसकी प्रतिक्रिया देखकर यह पता चल सकता है कि इस शिप को नष्ट करना चाहिए या नहीं?
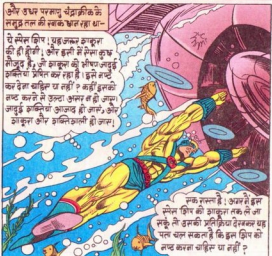
लेकिन ऐसा करने के लिए मैं इस शिप को उठाकर ले कैसे जाऊंगा? क्योंकि मेरी सुपर शक्ति तो 'एटॉमिक रिएक्टर' चालू करने से ही आएगी! और उसको चालू करते ही मुझ पर एटॉमिक ब्लास्टों का हमला फिर से शुरू हो जाएगा! यह खतरा तो मुझे मोल लेना ही होगा!
लेकिन इस बार मुझे अपने आप उड़कर दिल्ली तक जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी!
क्योंकि जब मैं दिल्ली की दिशा में पीठ करके उडूंगा, तो एटॉमिक ब्लास्ट का धक्का मुझे अपने आप दिल्ली की तरफ धकेलता चला जाएगा!
उधर- नागराज से पिट रहा शाकूरा एकाएक बुरी तरह से चौंक उठा-
अरे! य...यह क्या? मुझे आभास हो रहा है कि शाकूरा ग्रह के जादूगर योद्धा तेजी से मेरी तरफ आ रहे हैं! आखिर उनको मेरी स्थिति का पता कैसे चला?
शाकूरा का ध्यान बंटते ही-
नागराज उसे तांत्रिक तिलिस्म में डालने में सफल हो गया-
ये क्या है? मेरी जादुई शक्तियां इस घेरे के अन्दर सिमट रही हैं! यह कैसे हो सकता है! यह असंभव है!
भारती का तिलिस्म काम कर रहा है। क्योंकि शाकूरा के इसके अंदर गिरते ही मेरी हड्डियों का लचीलापन समाप्त हो गया है। मैं सामान्य हो गया हूं!

और उसी पल- दिल्ली की तरफ बढ़ते परमाणु पर से भी जादू का असर खत्म हो गया-
अरे! मेरे स्टॉमिक ब्लास्ट अपने आप कंट्रोल में कैसे आ गए? खैर, जो हुआ अच्छा ही हुआ! अब मुझे उल्टा उड़ने की जरूरत नहीं है! अब मैं डबल स्पीड से दिल्ली पहुंच सकता हूं!
शाकूरा गुस्से से बिलबिला रहा था-
क्या तू ये समझता है नागराज कि ये पिद्दी सा तिलिस्म शाकूरा के जादू को रोक सकता है? कभी नहीं!... मेरे जादू को इस तिलिस्म के बंधनों को तोड़ने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!
और फिर मैं तबाही का ऐसा तांडव करूंगा कि तू खुद बखुद कहेगा कि शाकूरा मेरी जान ले लो, पर ये तबाही रोक दो!
और तब शाकूरा को कोई नहीं रोक पाएगा!
तुमको हम रोकेंगे शाकूरा!
जादूगर योद्धा टकीरा, धंकूरा और पिकीरा! त... तुम लोगों ने मुझे कैसे ढूंढ निकाला?
उस धुएं के दैत्य में मौजूद जादू की ऊर्जा से, जिसे तुमने गलती से अंतरिक्ष में भेज दिया था!
मैंने? मैंने कब... ओह! वो तो उस परमाणु ने किया था! यह परमाणु मेरी हार का कारण बन रहा है। उसे तो मैं जिन्दा नहीं छोड़ूंगा!
वो तो तब होगा, जब हम तुझे छोड़ेंगे शाकूरा! तू वैसे भी हमारे सामने नहीं टिक सकता, और इस वक्त तो तू पहले से ही तिलिस्म में बेबस खड़ा है!

आऽऽऽह! मैंने गलती की जो महानगर में अपनी शिप को छोड़कर नागराज को मारने दिल्ली आ गया! क्योंकि मेरी उसी शिप में वह 'सोखूरा रत्न' है, जो शाकूरा ग्रह के जादुई सैलाबों को मुझ तक पहुंचा रहा है। अगर मैं 'सोखूरा रत्न' के और पास होता, तो मेरी शक्तियां भी बढ़ी हुई होतीं और तब ये तीन पिद्दी जादूगर मुझे कभी कैद न कर पाते। लेकिन अब पछताने से क्या फायदा? अब तो कहानी खत्म समझो... अरे! यह क्या?
मेरी शक्तियां बढ़ रही हैं। शिप मेरे पास आ रहा है! पर कैसे?
आहा! तूने आज सुबह से पहली बार अच्छा काम किया है परमाणु! अब मुझे आजाद होने से कोई नहीं रोक सकता!
यानी तुझे इस शिप से किसी तरह की शक्ति मिलती है। अब अगर मैं इस शिप को नष्ट कर दूं तो क्या होगा?
नहीं! नहीं! ऐसा मत करना! मत करना!
शाकूरा के चेहरे पर उभर आए भय के भाव ही परमाणु को सारी कहानी समझा गए-
और शाकूरा के कुछ समझ पाने से पहले ही परमाणु, शिप को हवा में उछालकर-
उसे कागज की तरह चीरता चला गया। उसके एटॉमिक ब्लास्टों ने शिप के चिथड़े उड़ा दिए-
कड़ड़ड़ड़ड़
ममम

नहीं! ये तूने क्या किया, मूर्ख! मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा! अब नागराज के साथ-साथ तू भी मरेगा!
हम जानते हैं कि अपनी स्पेस शिप में तू 'सोम्बूरत्न' लेकर भागा था, जो कहीं पर से भी शाकूरा ग्रह से जादुई तरंगों को खींच सकता है। लेकिन शिप के साथ-साथ वह रत्न भी नष्ट हो गया है! अब तू हमारे लिए एक मक्खी से ज्यादा और कुछ नहीं है!
ये सच कह रहे हैं। इससे पहले कि ये मुझे दुबारा जादुई पाश में बांधें, मुझे इस तिलिस्म से निकल जाना चाहिए! लेकिन कैसे? मेरी सीमित हो गई जादुई शक्तियां इस तिलिस्म के पार नहीं जा पा रही हैं। चारों तरफ से तिलिस्म ने मुझे घेरा हुआ है। लेकिन... हां! एक दिशा बची है। नीचे! मैं नीचे जा सकता हूं!
कूँऽऽममममममम
अरे! अरे! यह तो भाग रहा है! लेकिन मैं इसको भागने नहीं दूंगा!
नागराज और परमाणु, दोनों ही शाकूरा के पीछे लपके—
मेरी सीमित जादुई शक्तियां भी कम से कम एक सुरंग तो खोद ही सकती हैं।
लेकिन उसे पा नहीं सके—
कोई फायदा नहीं है नागराज! उस दुष्ट ने एक के बजाय कई सुरंगें बना डाली हैं। अब ये जानना असम्भव है कि वह किस सुरंग के रास्ते बाहर निकलेगा। वह हमें धोखा देने में सफल हो गया है!

पीछा करने का ख्याल छोड़ देने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था–

तुम लोग असफल नहीं हुए हो, नागराज और परमाणु! तुमने शाकुरा की मुख्य शक्ति को नष्ट कर दिया है! जादू तो अब भी उसके पास है, लेकिन वह जादू ज्यादा शक्तिशाली नहीं है! अब जब तक हम उसको पकड़ नहीं लेते, तब तक हम पूरी पृथ्वी पर नजर रखेंगे! और जैसे ही उसका जादू कहीं पर नजर आया, हम उसको धर दबोचेंगे!

अगली सुबह - प्रोफेसर के ऑपरेशन की सारी तैयारी पूरी हो चुकी थी! और समय पर ऑपरेशन शुरू हो चुका था–

हम इस स्पेशल रूम में प्रोफेसर का पूरा ऑपरेशन इस मॉनीटर पर देख सकते हैं, विनय! लाइव!

ये सारा एरेंजमेंट ममता की भाभी 'चन्दा' ने खास तौर से करवाया है! वे यहां पर रिसेप्शनिस्ट हैं न!*

सिर्फ देख सकते हैं शीना! लेकिन कुछ कर नहीं सकते! सिवाय एक काम के! भगवान से प्रार्थना करने का काम!

* चंदा जो शक्ति का मानवीय रूप है

विनय ने अपने आपको इतना असहाय कभी महसूस नहीं किया था! न इंस्पेक्टर विनय के रूप में और न ही परमाणु के रूप में! लेकिन दुआओं में बहुत असर होता है-
वेक अप विनय!... ऑपरेशन खत्म हो गया है!
RETION
OVER
इस वक्त विनय की स्पीड तो ओलंपिक की सौ मीटर रेस का रिकॉर्ड तक तोड़ सकती थी-
डॉक्टर, डॉक्टर कैसे हैं प्रोफेसर?
SILENCE PLEASE
OPER
रिलैक्स विनय! ऑपरेशन वॉज सक्सेसफुल! प्रोफेसर एकदम ठीक है!
ओ शीना, शीना, शीना! मैं बता नहीं सकता कि मैं कितना खुश हूं! मुझे तो इतना टेंशन हो रहा था कि बस पूछो मत!
?
लेकिन तुम इधर-उधर किसको देख रही हो? कोई आने वाला है क्या?
यह तो पता नहीं विनय! पर उसे आना जरूर चाहिए था!
उसे? उसे किसे?
परमाणु को!
ऑफ्टर ऑल, प्रोफेसर की हालत के लिए वह भी कुछ हद तक जिम्मेवार है!
शीना सही कह रही है! परमाणु को तो आना ही चाहिए! अब मैं जाऊंगा तो ही परमाणु आ पाएगा!
अब तुम कहां चल दिए विनय?
मिठाई लेने जा रहा हूं, शीना! सबको मुंह मीठा कराना है न! तुम मेरा वेट करना! यहीं! मैं यूं गया और यूं आया!
परमाणु के रूप में!

अगर विनय अस्पताल में कुछ देर और रुक जाता, तो शायद वह मिठाई लाने की जल्दी नहीं करता–
डॉक्टर! कम फास्ट! पेशेंट को झटके लग रहे हैं!
ओ माई गॉड! गुड न्यूज एंड बैड न्यूज! प्रोफेसर कोमा से बाहर आ रहे हैं। लेकिन उनके दिमाग में उथल-पुथल कुछ ज्यादा ही हो रही है। इतनी ज्यादा कि हमारे यंत्र उसे माप नहीं पा रहे हैं!
यह क्यों हो रहा है, यह तो मुझे समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन हमको प्रोफेसर के ब्रेन में हो रही इस 'हाइपर एक्टिविटी को रोकना होगा! वर्ना प्रोफेसर के मस्तिष्क में कोई स्थायी खराबी भी हो सकती है! पेथेडीन का इंजेक्शन तैयार करो! तुरन्त!
शीना! ये क्या हो रहा है? मुझे तो खबर मिली थी कि प्रोफेसर वर्मा का ऑपरेशन ठीक ठाक हो गया है। लेकिन... फिर ये अफरा तफरी सी क्यों मची हुई है!
THEATRE
परमाणु! मुझे पता था कि तुम जरूर आओगे! अभी-अभी प्रोफेसर कोमा से बाहर तो आ गए थे, लेकिन उन पर दौरा सा पड़ रहा था!
दौरा! यह नहीं हो सकता! यह नहीं हो सकता!
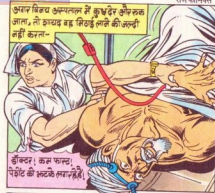
कुछ ही मिनटों के बाद डॉक्टर दस्तूर परमाणु को प्रोफेसर वर्मा की हालत समझा रहे थे-
वैसे तो यह बात इंस्पेक्टर विनय को बतानी चाहिए लेकिन शायद उसके यहां आने तक मैं यहां न मिलूं! मुझे दूसरे अस्पताल में ऑपरेशन करने जाना है!
प्रोफेसर को क्या हुआ है, यह ठीक-ठाक बताना तो मुश्किल है! वैसे उनके दिमाग में जमा खून का थक्का तो हमने निकाल दिया है!
और वे कोमा से बाहर भी आ गए थे। लेकिन उनके दिमाग में एक तूफानी हलचल होने लगी थी, जिसके कारण हमें उनको एक इंजेक्शन लगाना पड़ा! और वे फिर से कोमा में चले गए हैं!
अब इंतजार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है! शायद कल तक प्रोफेसर वर्मा की हालत में कुछ सुधार आ जाए!
लेदस वेट एंड वॉच! ओ० के ? अब मुझे जाना है! ये बातें विनय को बता देना!
बेचारा विनय! यह सुनकर न जाने उसके दिल पर क्या गुजरेगी ?
दिल्ली जैसे शहर में रात होते-होते सड़कें भले ही सुनसान हो जाएं लेकिन कई जगहें लोगों से खचाखच भरी रहती हैं-
जैसे जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम! जहां पर पॉप ग्रुप 'पप्पा-रप्पा' का शो हो रहा है -
यार ये अंग्रेजी गाने अपने पल्ले तो पड़ते नहीं!
तो यहां पर किसके पल्ले पड़ रहे हैं! मैं तो लेजर शो देखने आया हूं जो पॉप शो के साथ ही दिखाया जा रहा है!
वाह यार! कान फटे जा रहे हैं, लेकिन आंखों को बड़ा सुख मिल रहा है! क्या डांसिंग लेजर मैन बनाया है! परफेक्ट!

लेकिन तभी नजारा बदल गया-
OH BABY, MY LOVE!
हेल! व्हाट्स हैपेनिंग? ये लेजर मैन, डॉसिंग करना छोड़ कर हमारा स्पीकर तोड़ता है!
कुछ गड़बड़ होना मांगता! स्टद लेजर बीम! लेजर बीम बन्द करो!
आई एम ट्राइंग सर! मैं लगातार कोशिश कर रहा हूं लेकिन ये बीम बन्द नहीं हो रही है! बल्कि ये तो और स्ट्रांग होती जा रही है। और तेज होती जा रही है! ...
...और तो और मैं इस मशीन को तोड़ तक नहीं पा रहा हूं!
घ ाक
तो फिर भागो! क्योंकि ये लेजर मैन तो हमको छूते ही कब्रिस्तान पहुंचा देगा!
स्टेज खाली होने से पहले ही स्टेडियम खाली होना शुरू हो गया था-
इस भगदड़ का असर उस पूरे इलाके में देखा जा सकता था, और राज का होटल भी उसी इलाके में था-
लोग बुरी तरह से भयभीत होकर स्टेडियम की तरफ से भागे आ रहे हैं! जरूर कोई भयानक घटना घटी है! कहीं यह शाकूरा का काम तो नहीं है?

लेकिन नागराज के स्टेडियम तक पहुंचने से पहले ही दिल्ली की आंख परमाणु की नजर ने उस मुसीबत को देख भी लिया था-
और उसे रोकने की तैयारी भी कर ली थी-
यह क्या हो रहा है? लेजर बीम से बनी इस डांसर की आकृति पूरे स्टेडियम को तबाह कर रही है! लेकिन यह कैसे हो सकता है?
क्योंकि एक तो ये सारी आकृतियां और उनकी हरकतें पूर्व नियोजित होती हैं, और दूसरे ये लेजर बीम इतनी कमजोर होती हैं कि अल्यूमिनियम की शीट तक को न छेद सकें! फिर इसमें ये शक्ति कैसे? ओह!
स्टेडियम की दीवार नष्ट करने के बाद ये आकृति बाहर की तरफ जा रही है। वहां पर जाकर ये तो उत्पात मचा देगी, क्योंकि जिस भी चीज को ये छुएगी, वह जलकर खाक हो जाएगी! मुझे इसे रोकना होगा!
रोकने के लिए पकड़ने की जरूरत पड़ती है-
और ऐसी चीज को कौन पकड़ सकता है, जिसका स्पर्श ही घातक हो-

आऽऽऽह! पूरे शरीर में करेंट सी सनसनाहट दौड़ गई है! मेरी स्बेस्टस की पोशाक ने मुझे लेजर की उष्मा से तो बचा लिया, लेकिन लेजर तरंगों की कंपनों से नहीं बचा पाया! मुझे संभलने में वक्त लगेगा!... पर यह तो प्रकाश की गति से मुझे मारने के लिए बढ़ा चला आ रहा है!
लेजरमैन का बढ़ता हुआ हाथ-
सिर्फ उस स्थान से झुलसा पाया, जहां पर एक क्षण पहले तक परमाणु गिरा हुआ था-
नागराज! बड़े सही वक्त पर आए दोस्त!
अब मुझे कहना पड़ेगा कि मदद के लिए धन्यवाद!
यह तो गैरों को दिया जाता है परमाणु! हम तो तुम्हारे अपने हैं! गैर तो ये लेजरमैन है!
अब क्या करें नागराज? इसको रोकने के लिए कोई उपाय भी तो हमारे पास नहीं है!
उपाय भी निकल आएगा, परमाणु! इसको जरूर लेजर मशीन द्वारा प्रक्षेपित किया जा रहा है! तुम इसको शहर की तरफ बढ़ने से रोको, और मैं इस मुसीबत की जड़ को नष्ट करता हूं, यानी लेजर मशीन को!
वाह, वाह! क्या बंटवारा किया है काम का! खतरनाक वाला हिस्सा मुझे थमा दिया, और आसान वाला खुद कर रहे हो!
वह इसलिए परमाणु, क्योंकि तुम्हारी शक्तियां इससे लड़ने के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं! मेरी नहीं!
मैं तो मजाक कर रहा था, नागराज! काम जितना खतरनाक हो, उसे करने में मजा भी उतना ही आता है!
इस पर परमाणु ब्लास्ट का वार करके देखता हूं!

लेकिन-

ओह! परमाणु ब्लास्ट ने लेजर किरणों को जरा सा तोड़ा था, लेकिन लेजर मशीन से आती प्रकाश किरणों ने उनको फिर से बना दिया है! और वह भी प्रकाश की स्पीड से! खैर, मेरे हमलों से एक फायदा तो हुआ है! और वह ये कि ये स्टेडियम से बाहर भागना भूलकर मुझे मारने के लिए यहीं पर रुक गया है! लेकिन अब इसको रोकूं तो रोकूं कैसे?

लेजर किरणों को तो एक ही चीज रोक सकती है! शीशा! और वह भी कुछ देर के लिए!

शायद उतनी देर में नागराज मशीन को नष्ट कर दे! लेकिन यहां पर शीशा आएगा कहां से?

SAND
रेत

ये रेत का ढेर! जिसे शायद स्टेडियम में कुछ निर्माण कार्य के लिए लाया गया है! इससे मेरा काम बन जाएगा! क्योंकि शीशा, रेत को गर्म करके ही बनाया जाता है! और यहां पर रेत को गर्म करने का काम मेरे परमाणु ब्लास्ट करेंगे! लेकिन अभी नहीं...

... अभी तो मैं इन रेत से भरी बोरियों को हवा में उछालकर लेजर-मैन की तरफ फेंकूंगा! बोरे तो जल जाएंगे!

लेकिन हवा में उड़ते रेत के इन गुबारों पर मैं ऐसे कोणों से परमाणु ब्लास्ट के वार करूंगा कि इस गर्मी में पिघलकर जो शीशा बने, वह 'प्रिज्म' के रूप में ढलकर इसको अपनी कैद में ले ले!

अब प्रिज्म की तीनों सतहें लेजरमैन के शरीर को बना रही लेजर किरणों को एक दूसरे की तरफ परावर्तित करती रहेंगी, और लेजर-मैन कुछ देर तक इसकी कैद में रहेगा!

राज कॉमिक्स
परमाणु तो कुछ पलों के लिए सफल हो गया था, लेकिन नागराज ने अपने काम को जितना आसान समझा था-
वह उतना था नहीं-
आऽऽऽह! इस 'लेजर प्रोजेक्टर' के चारों तरफ एक अदृश्य कवच चढ़ा हुआ है। 'फोर्स फील्ड' का कवच! मेरे वार इसको भेद नहीं पा रहे हैं, और इसको स्पर्श करने से तेज झटका भी लग रहा है। इसको नष्ट करने की कोशिश करने के बजाय...
...मुझे उन तारों को तोड़ना चाहिए जो इस यंत्र तक बिजली पहुंचा रहे हैं! विद्युत का प्रवाह ठप्प होते ही यह मशीन भी ठप्प हो जाएगी!
नागराज का तर्क तो सही था-
लेकिन यह 'तर्क' शायद मशीन बनाने से पहले ही सोच रखा था, और उसका इलाज भी तैयार कर रखा था-
ओह! लेजर प्रोजेक्टर अभी भी चालू है! यानी इसके अन्दर पॉवर बैक अप है! शायद बैटरी लगी है! अब मैं क्या करूं?
एक कोशिश और कर सकता हूं!
इस प्रोजेक्टर को इसके बेस सहित ही उखाड़ देता हूं!
आऽऽऽह!
ऐसी कोशिश करते ही एक नया सिक्योरिटी सिस्टम चालू हो गया-
64

और नागराज का वह प्रयास भी विफल हो गया-
आऽऽऽह! मैं इस प्रोजेक्टर को छू नहीं सकता, इसकी ऊर्जा बन्द नहीं कर सकता, और इसको अपने स्थान से हटा भी नहीं सकता!
अगर मैं इन लेजर किरणों को किसी भी चीज से ढकने की कोशिश भी करूंगा तो वह चीज पलभर में खाक हो जाएगी!
आखिर मैं इन किरणों को रोकूं तो कैसे?
उधर परमाणु भी चकित हो रहा था-
ओह! इसने अपनी गर्मी से प्रिज्म को भी पिघला डाला! नागराज क्या कर रहा है? वह लेजर प्रोजेक्टर को नष्ट क्यों नहीं कर पा रहा है? जरूर कोई मुश्किल आ पड़ी होगी!
नागराज जब तक सफल न हो जाए, तब तक मुझे लेजरमैन से जूझते रहना पड़ेगा! लेकिन जूझने के लिए शक्तियां बराबर की होनी चाहिए! यह लेजर प्रकाश तरंगों से बना है!
मुझे अपने 'स्टॉमिक कणों' के रूप में इससे टकराना होगा!...
देखते हैं कि स्टॉमिक कणों और लेजर तरंगों का टकराव क्या रंग लाता है?
दोनों अद्भुत आकृतियों के टकराव से निकली ऊर्जा की चिंगारियां पूरे वातावरण को दमकाने लगीं-

ओह! सिर्फ लेजरमैन नजर आ रहा है! लेकिन चिंगारियों से पूरा स्टेडियम चमक रहा है! जरूर परमाणु अपने आपको 'परमाणु कणों' में बदलकर इससेटकरा रहा है! शायद परमाणु ज्यादा देर तक इस लेजरमैन के सामने न टिक पाए। मुझे जल्दी से जल्दी लेजरमैन को नष्ट करने का तरीका ढूंढना होगा! लेकिन लेजर मैन तो एक बेजान चीज है। ये अपने आप हम पर हमला नहीं बोल सकता!
ऐसी चीज किसी भी कंप्यूटर में पहले से नहीं भरी जा सकती है! इसे जरूर कोई चला रहा है! शायद शाकूरा! नहीं! अगर यह जादू होता तो अब तक उसके ग्रह वाले ये हंगामा देख चुके होते, और यहां पर आ चुके होते! ये जादू नहीं है! फिर ये है क्या?
क्योंकि ये लेजर आकृतियां तो कंप्यूटर द्वारा पैदा की जाती हैं, जिनकी हर हरकत कंप्यूटर में पहले से ही भरी होती है। लेकिन लेजरमैन तो हमारी हरकतों के हिसाब से लड़ रहा है!
इस लेजरमैन को अगर कोई संचालित कर रहा है तो वह आस-पास ही है और जल्दी ही मेरे जासूस सर्प उसे ढूंढ... आहा! मिल गए संकेत! वह यहीं पर है! इस टॉवर के बेस में छिपा हुआ है वह शैतान!
कड़ऽऽ-चटाऽऽ
एक भीषण वार से फर्श तोड़ता हुआ नागराज उस टॉवर के बेस की तरफ लपका-
और कुछ ही पलों बाद-

वह उस शख्स के सामने खड़ा था-
ये शाकुरा नहीं है! कोई और ही है! चेहरे पर जोकर जैसा मुखौटा चढ़ाए हुए है।... और यह जैसी हरकतें कर रहा है वह लेजर डांसिंग मैन भी वैसी ही हरकतें कर रहा है। यही चला रहा है, उस आकृति को! इस 'मुखौटा' को तुरन्त रोकना होगा!
नागराज के वार ने 'मुखौटा' को जमीन पर ला पटका-
धड़ाक
और उसी पल परमाणु से लड़ रही वह लेजर आकृति भी दूर जा गिरी-
ये क्या हुआ? ये तो मुझ पर हावी हो रहा था! फिर एकाएक दूर कैसे जा गिरा?
कारण यहां पर मौजूद था-
हा हा हा! आ गया मरने के लिए नागराज? आ जा! तेरे लिए मैंने पहले से ही तैयारी करके रखी हुई है!
खून चूसने वाले यांत्रिक मच्छर! सैकड़ों की तादाद में!

और ये मेरा खून चूस रहे हैं! खून के साथ-साथ ये मेरा जहर भी चूसते जा रहे हैं, लेकिन यांत्रिक होने के कारण इनके शरीर गल नहीं रहे हैं। पर मुझे कमजोरी आती जा रही है! आखिर ये मुखौटा है कौन, और मुझे मारना क्यों चाहता है? खैर, जिन्दगी रही तो ये भी सोच लूंगा!
फिलहाल तो मच्छरों से पीछा छुड़ाना है, और यह काम मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर आराम से कर सकता हूं!
हाहाहाहा! मैं जानता था कि तू यही करेगा! अब मेरी स्पेशल सक्शन मशीन तेरे कणों को अंदर घसीट लेगी, और जैसे ही तू सामान्य रूप में आएगा, 'सक्शन मशीन' के ब्लेड तेरे शरीर का कीमा बना देंगे!
और तब तक मैं अपने मच्छरों को सक्शन मशीन की सीमा से दूर रखूंगा!
ओह! अगर मैं सामान्य रूप में आया तो ये मच्छर मेरा जहर चूस लेंगे, और अगर कण रूप में एक पल भी और रहा तो ये सक्शन मशीन मुझे खींच लेगी! इधर कुआं है तो उधर खाई! क्या करूं?
तीन पलों बाद मुझे सामान्य रूप में तो आना ही है! और मेरे सामान्य रूप में आते ही ये मच्छर मुझसे चिपकेंगे जरूर! अब मुझे इनसे पीछा छुड़ाने के लिए सिर्फ इस सक्शन मशीन के पास तक जाना है! मेरे जमीन में चिपके हाथों को तो इसकी सक्शन पॉवर छुड़ा नहीं पाएगी!
लेकिन देखते हैं कि मच्छरों में मुझसे चिपकने की कितनी शक्ति है! नहीं है!
मच्छरों को सक्शन मशीन तेजी से खींचने लगी, और उनके सैकड़ों मशीनी शरीर सक्शन मशीन में फंस-फंसकर उसको जाम करने लगे-
नागराज की एक मुसीबत ने ही, उसको दूसरी मुसीबत से छुटकारा दिला दिया था-

और इससे पहले कि सुरबौटा अगले वार के लिए अपने आपको तैयार कर पाता-
नागराज ने अपना वार कर दिया-
तेरे यंत्र बहुत खतरनाक हैं सुरबौटा! लेकिन अब, जिससे तू इन खतरनाक यंत्रों को चला रहा है, वह बेल्ट ही तेरे शरीर पर नहीं रहेगी! यह अब होगी...
...नागराज के जूतों के नीचे!
टूटी फूटी हालत में!
बेल्ट के टूटते ही-
कड़ड़ड़
ताक
लेजर प्रोजेक्टर का कंट्रोल भी खत्म हो गया, और लेजर प्रोजेक्टर के ठप्प होते ही लेजरमैन भी लुप्त हो गया-
लेजरमैन गायब! वाह! यानी नागराज ने अपना काम कर दिया है! अभी उसे ढूंढकर उसकी पीठ थपथपाता हूं!
नागराज! नागराज! कहां हो तुम?
सुरबौटा के लिए हवाएं भी रास्ता छोड़ देती हैं नागराज!
अरे! अरे! यह तो हवा में दरवाजा बनाकर उसमें घुस रहा है! मुझे इसे रोकना होगा!
परमाणु! परमाणु आ रहा है! यानी अब तुम दो हो, और मैं एक!
अब मैं यहां नहीं रूकूंगा!
भागोगे कहां सुरबौटा? भागने के सारे रास्ते तो बन्द हैं!

लेकिन मुखौटा नागराज से ज्यादा फुर्तीला था-
ओह! मुझे इस पर विषफुंकार छोड़कर इसको पहले ही बेहोश कर देना चाहिए था! लेकिन अब क्या हो सकता है? अब तो वह गायब हो चुका है!
क्या हुआ नागराज?
तुम जीत कर भी चिंतित दिखाई दे रहे हो!
यह अधूरी जीत है परमाणु!
क्योंकि मुख्य विलेन मुखौटा तो हमारे हाथों से निकल भागा है!
मुखौटा? ये कौन है?
जवाब में नागराज पूरा घटनाक्रम सुनाता चला गया-
ओह! एक नई मुसीबत! पर ये मुखौटा कौन हो सकता है, जो तुमको और मुझको मारना चाहता है? न तो तुम इसे जानते हो और न ही मैं!
हम लोग मुखौटाको नहीं जानते परमाणु, लेकिन शायद मुखौटे के पीछे छिपे चेहरे को जानते हों!
घप
काश मैं उसका चेहरा देख पाता!
पिंपी पिंपी
ओह! मेरा एक जरूरी मैसेज आ रहा है नागराज! मुझे जाना होगा।
मैसेज प्रोबॉट का है, और अर्जेंट है! वह मुझे ट्रांसमिट कर रहा है! लेकिन ऐसा क्या हो सकता है, जिसने प्रोबॉट को मुझे एकाएक फ्यूजन चेम्बर में बुलाने पर मजबूर कर दिया है?
जवाब परमाणु के पैरों तले से जमीन खिसकाने वाला था-
आओ परमाणु! वैसे तो मुझे तुमको अस्पताल पहुंचने के लिए कहना चाहिए था, लेकिन मैंने तुमको यहां पर पहले बुलाना ज्यादा उचित समझा!

अस्पताल पहुंचने के लिए? क्या हुआ? प्रोफेसर तो ठीक हैं न?
जरूरत से ज्यादा ठीक हैं परमाणु!... वे अस्पताल से लापता हैं!
लापता!
यानी... उनका अपहरण हो गया है!
नहीं! उनको अस्पताल के 'बैक-गेट' के चौकीदार ने जाते हुए देखा था। रोकने की कोशिश भी की थी! लेकिन प्रोफेसर ने उसको बेहोश कर दिया!
इसका मतलब प्रोफेसर अपने-आप चल सकते हैं! वे कोमा से बाहर आ गए हैं! ये तो खुशी की बात है, प्रोबॉट!
लेकिन वे इस तरह से क्यों चले गए?
और गए तो यहां पर क्यों नहीं आए?
मैं नहीं जानता कि प्रोफेसर का कोमा से बाहर आना खुशी की बात है या दुख की बात! वैसे मैं इतना अन्दाजा जरूर लगा सकता हूं कि वे कर क्या रहे हैं?
क्या कर रहे हैं?
बताता हूं! तुम यह तो जानते ही हो कि मैंने लेजरमैन को स्टेडियम में उत्पात मचाते देखकर तुमको उसकी सूचना दी थी! और फिर जब तुम नागराज के पास टॉवर में पहुंचे तो मैंने तुम्हारे माध्यम से नागराज और तुम्हारी बातें भी सुनीं, और 'मुखौटा' नाम के विलेन के बारे में जाना! यह भी जाना कि वह लेजरमैन उसी मुखौटा की रचना थी!
अब इधर ध्यान दो! अब मैं तुमको कुछ ऐसी फाइलें दिखाने जा रहा हूं, जो उन अविष्कारों से संबंधित है, जिन को प्रोफेसर ने बनाना तो शुरू किया था...
...लेकिन या तो वे उनको पूरा नहीं कर पाए और या ज्यादा खतरनाक होने के कारण वे उनको दुनिया के सामने नहीं लाए!
इन अविष्कारों के विषय में या तो प्रोफेसर जानते हैं... या उनका प्रतिरूप रोबॉट होने के कारण मैं! और इन अविष्कारों में पहली फाइल है...
लेजरमैन की!

यानी... अगर इन अविष्कारों के बारे में सिर्फ तुम और प्रोफेसर जानते हो तो इसके अनुसार तो...
...प्रोफेसर वर्मा ही मुखौटा हैं!
लेकिन अगर इस बात को सच मान भी लिया जाए तो उनके अविष्कार ने मुझ पर हमला क्यों किया?
और नागराज के अनुसार वे नागराज को मारने की बात कह रहे थे! भला नागराज को प्रोफेसर क्यों मारना चाहेंगे?
जैसे तुमको पहले यह गलतफहमी हो गई थी कि नागराज ने ही प्रोफेसर पर हमला करके उनको कोमा में पहुंचाया है, शायद वैसे ही प्रोफेसर भी नागराज को ही अपनी हालत का जिम्मेदार मानते हों!
हो सकता है कि प्रोफेसर वर्मा 'मुखौटा' ही न हों! होने को तो कुछ भी हो सकता है परमाणु!
लेकिन सच्चाई तो मुखौटा के मिलने पर ही पता लग सकेगी!
यह भी तो हो सकता है कि ब्रेन ऑपरेशन ने उन पर यह असर डाला हो! और अब वे अपनी वैज्ञानिक क्षमता का गलत उपयोग कर रहे हों!
मुझे प्रोफेसर वर्मा या मुखौटा में से किसी एक को तो तुरंत तलाश करना होगा प्रोबॉट! अगर दोनों एक ही हैं, और अगर प्रोफेसर ने दुबारा नागराज पर हमला करने की कोशिश की...
...तो नागराज जैसा शक्तिशाली इंसान उनको नुकसान पहुंचा सकता है! और मैं प्रोफेसर को नुकसान नहीं पहुंचने दूंगा!
क्योंकि वे जो कुछ भी कर रहे हैं, वह उनके असंतुलित मस्तिष्क के कारण हो रहा है! वे जानबूझ कर कोई बुरा काम नहीं कर रहे हैं!
इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: सुपर विशेषांक सुरमा

परमाणु की तो सिर्फ आशंका ही हो रही थी–
लेकिन नागराज तो अभी, अपने होटल तक भी नहीं पहुंच पाया था–
फररररर
बस नागराज! अब तू यहां से आगे नहीं जाएगा!
यहां से आगे जाएगा तो सिर्फ...
...तेरी लाश!
मुखौटा! आखिर तुम हो कौन? और तुम चाहते क्या हो?
तुम्हारी जान! वैसे तो मुझे तुम्हारी जान अपने हाथों से लेने में बड़ा आनन्द आता, लेकिन मैं तुम जैसे कीड़े-मकोड़ों के खून से अपने हाथ रंगना नहीं चाहता!
देख! चार दिशाओं से चार मौतें मेरी तरफ बढ़ी चली आ रही हैं!
और इन चारों मौतों में यह होड़ लगी है कि तुझे मौत कौन देगा!
आssssह!
घबराना मत नागराज!

Amaan
... इस लड़ाई में तुम अकेले नहीं हो ! परमाणु भी तुम्हारे साथ है!
ऐसे लड़ने से कोई फायदा नहीं होगा परमाणु ! इन चारों के अंदर कुछ अजीबो-गरीब वैज्ञानिक शक्तियां हैं! और इनके पैरों में चिपकी 'फ्लाइंग डिस्क' इनको बहुत तेज गति और फुर्ती दे रही है!

जब तक हम इनकी शक्तियों को समझ पाएंगे, तब तक तो हम अपनी जान से हाथ धो चुके होंगे! इनको रोकने का एक ही तरीका है! मुखौटा को पकड़ना!
क्योंकि वह ही इनको हमले का निर्देश दे रहा है! उसके बेबस होते ही ये सभी बेबस हो जाएंगे!

तुम्हारा कहना ठीक है नागराज! लेकिन बगैर इन चारों को नष्ट किए मुखौटा पर हमला करना खतरनाक भी हो सकता है! वैसे भी जितनी देर में हम मुखौटा को पकड़ेंगे, उतनी देर में तो ये चारों दिल्ली को तबाह कर देंगे!
ये बातें तो सिर्फ बहाना हैं! दरअसल मैं ये नहीं चाहता कि मेरे, मुखौटा का चेहरा देखने से पहले, मुखौटा पर कोई भी हमला करे!
ठीक है परमाणु! अगर तुम ऐसा चाहते हो तो ऐसा ही सही! तुम उन दोनों से निपटो, और मैं इन दोनों को संभालता हूं!
मैं परमाणु की बात मान तो गया हूं, लेकिन एक बहुत बड़ी समस्या है। ये लड़ाई हवा में ही लड़ी जा सकती है, क्योंकि इन चारों के पैरों में फ्लाइंग डिस्कें बंधी हुई हैं! और हवा में लड़ाई मैं सिर्फ एक ही हाथ से लड़ सकता हूं! क्योंकि मेरा दूसरा हाथ तो नागरस्सी को पकड़ने में ही उलझा रहेगा!
ओह! विष फुंकार असरदार साबित नहीं हो रही है!...
...यानी मेरी अधिकतर नागशक्तियां मेरी मदद नहीं कर सकतीं!

सिवाय शायद इच्छाधारी शक्ति के! और इससे भी मैं सिर्फ अपना बचाव ही कर सकता हूं! ओह, नहीं!
ऐसे में इनके वार मुझे पार करके इमारतों को नुकसान पहुंचा रहे हैं! यानी मैं खुद बचने के चक्कर में दूसरों को नुकसान पहुंचा रहा हूं! मैं ऐसा नहीं कर सकता!
मुझे इनसे निपटने का कोई और रास्ता सोचना होगा!
आऽऽऽह!
आऽऽऽह! ये दहकता हाथ! इसने तो मेरे पूरे शरीर में असहनीय जलन मचा दी है!
मेरे नाग यह घाव भर तो देंगे, पर उनको इसमें समय लगेगा!
और उतनी देर तक मेरे शरीर में इनके वारों से बच पाने लायक फुर्ती नहीं रहेगी!
आ
गि
हि
ह
नागराज अगर दुश्मनों के मुकाबले में थोड़ा कमजोर पड़ रहा था-

तो परमाणु की हालत भी कुछ खास बेहतर नहीं थी-
प्रोबॉट! ये क्या मुसीबतें हैं? इनका विश्लेषण करके इनके बारे में मुझे बताओ?
विश्लेषण करने की जरूरत नहीं है परमाणु! मेरे सामने प्रोफेसर के अधूरे और प्रतिबंधित अविष्कारों की फाइल कंप्यूटर पर खुली हुई है! और ये चारों भी उन्हीं प्रतिबंधित आविष्कारों का हिस्सा हैं। तुम जिनसे लड़ रहे हो, वे 'सॉरे मैन' और 'सॉलिड बीम मैन' हैं। एक आरीदार किरणें छोड़ता है जो सर्किट पूरा होते ही किसी भी चीज को प्याज के लच्छों की तरह काट डालती हैं और दूसरा एनर्जी की ठोस किरणें छोड़ता है, जो किसी भी चीज को वैसे ही तोड़ सकती हैं, जैसे पुरानी इमारतों को 'हैमर बॉल'!
और नागराज के प्रतिद्वन्द्वी 'ब्लास्टर मैन' तथा 'बर्निंग हैंड मैन' हैं! इनकी शक्तियां तो तुम देखकर ही समझ सकते हो!
वैसे तो प्रोफसर ने तुम्हारी परमाणु पोशाक की तरह ही इनकी सिर्फ पोशाकें डिजाइन की थीं जिनको कोई भी इंसान पहनकर इन शक्तियों के साथ लड़ सके। लेकिन अभी मेरे यंत्रों पर कोई भी 'बॉयोलोजिकल सिग्नल' नहीं आ रहे हैं! यानी फिलहाल इन पोशाकों के अन्दर कोई इंसान नहीं हैं! ये सिर्फ पोशाकें हैं, जिनको 'मुखौटा' शायद अपनी किसी शक्ति की मदद से कंट्रोल कर रहा है!
SAW-RAY MAN
BIO-SCAN NEGATIVE

नागराज! ये सिर्फ... पोशाकें हैं! इनके अन्दर न तो कोई जीवित इंसान है, और न ही कोई रोबॉट!
ओह! तभी मैं कहूं कि मेरी नागशक्तियां काम क्यों नहीं कर रही हैं!... खैर एक तरीके से सोचो, तो ये अच्छी खबर है! क्योंकि अब मैं इनको नष्ट कर सकता हूं। पहले मैं ये सोचकर इन पर घातक वार नहीं कर पा रहा था कि शायद इन पोशाकों के अन्दर जीवित इन्सान हो!
अब मुझे नागशक्तियों का सहारा छोड़कर नाग बुद्धि की मदद लेनी होगी! अगर मैं नागरस्सी को छोड़कर इसकी पीठ से चिपक जाऊं...
तो शायद इसका साथी मुझ पर हमला न करे... ओह!
ये मुझे नष्ट करना चाहते हैं! इनको इस बात की कतई परवाह नहीं है कि मेरे साथ-साथ इनका साथी भी नष्ट होता है या नहीं! वैसे भी मुखौटा अगर ऐसी एक पोशाक बना सकता है तो दस और भी बना सकता है!
अगर मैं ऐन समय पर इसकी फ्लाइंग डिस्क की दिशा मोड़कर बच न गया होता तो इस ब्लास्ट ने मेरी धज्जियां उड़ा दी होतीं! आहा! समझा! अगर मैं अपनी नागशक्ति से इसकी फ्लाइंग डिस्कों को मोड़ सकता हूं, तो मैं इसको किसी भी दिशा में ले भी जा सकता हूं!

अब शिकारी बनूंगा मैं, और शिकार बनेंगे...
... मेरे शिकारी!
मुखौटा के कुछ समझ पाने से पहले ही-
एक खिलाड़ी आउट हो चुका था-
नागराज ने अपना पहला शिकार कर लिया था-
तो परमाणु की भी बराबरी तो करनी ही थी-
सॉरे मुझे अपनी किरणों के शिकंजे में जकड़ रहा है! और ये किरणें मेरा पीछा नहीं छोड़ रही हैं!
मैं तो ट्रांसमिट भी नहीं हो पा रहा हूं, क्योंकि मेरे 'परमाणु-कण' भी इस शिकंजे से बाहर नहीं जा पा रहे हैं!
अब सर्किट पूरा होने ही वाला है! और सर्किट पूरा होते ही मैं जैसे ही सामान्य रूप में आऊंगा, वैसे ही प्याज के लच्छों की तरह कट जाऊंगा!
एक कोशिश की जा सकती है! अगर मैं सॉरे मैन को सर्किट पूरा होने से पहले उसके ही शिकंजे में लपेट सकूं...

... तो सर्किट पूरा होते ही इसका शरीर तो कट जाएगा, लेकिन मैं परमाणु कणों में बदलकर बच जाऊंगा, क्योंकि कोई भी किरण अणुओं को नहीं काट सकती!
वाह, परमाणु! दिमाग का बहुत अच्छा इस्तेमाल किया 'सॉलिड-बीम' तुमने! वरना तुम न जाने कब तक इस 'किरण-शिकंजे' में फंसे रहते!
अब जब तक तुम से निपटोगे, तब तक मैं मुखौटा का 'बायो स्कैन' करके यह पता लगाने की कोशिश करता हूं कि ये प्रोफेसर ही है या कोई और!
बायो-स्कैन में उभरी आकृति तो प्रोफेसर की ही लग रही है! लेकिन यह क्या?
प्रोबॉट ने कुछ आश्चर्यजनक देख लिया था
लेकिन परमाणु के पास वह आश्चर्यजनक बात सुनने का समय नहीं था-
आऽऽऽह! ये सॉलिड बीम तो तेजी से इधर-उधर उड़ कर मेरे ब्लास्टों से बचे जा रहा है!
लेकिन मैं इसकी सॉलिड बीम के वारों से नहीं बच पा रहा हूं!
अगर मैं एक बार इसको पकड़ सकूं तो...
... आह! इसको पकड़ने का सबसे सीधा तरीका तो यही है!
कि मैं अपने आपको इसके शिकंजे में फंस जाने दूं!
आऽऽऽह! इसने फिर से मुझे इमारत के साथ दबा दिया है!

उधर नागराज ने अपने पहले दुश्मन पर तो विजय प्राप्त कर ली थी, लेकिन 'बर्निंग हैंड' को नष्ट करने में उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था—
ओह! अब ये मुझ पर नहीं, बल्कि 'सर्पस्त्री' पर हमला कर रहा है। इसकी कोशिश मुझे जमीन पर पहुंचाने की है, जहां पर मेरी शक्ति बहुत कम हो जाएगी।
लेकिन जब तक आस-पास हाथ चिपकाने की जगहें मौजूद हैं, तब तक मुझे जमीन पर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
और शायद इसी निर्माणाधीन इमारत में मुझे इससे निपटने का सामान भी मिल जाएगा।
इस बार 'बर्निंग हैंड' जैसे ही नागराज की तरफ लपका—
नागराज का शरीर तेज गति से एक तरफ हट गया, और 'बर्निंग हैंड' के हाथ उसको पार करते हुए—
पीछे दीवार में लगे लोहे के गार्डरों में जा धंसे—
मैं जानता हूं कि तू लोहे तक को पिघला कर अपने हाथों को जल्दी ही बाहर निकाल लेगा! लेकिन मैं अभी ऐसा इंतजाम कर देता हूं कि तू इस बीम को जल्दी न पिघला पाए!
अब जब तक पानी की धार तेरे हाथ और इन बीमों पर गिरती रहेगी, तब तक लोहा ठंडा रहकर ठोस का ठोस बना रहेगा, और तेरे हाथ इसी में फंसे रहेंगे!
अब तू मेरे लिए एक ठहरा हुआ निशाना बन गया है!...

...और नागराज ऐसे मौके चूकता नहीं है!
नागशक्ति से भरे एक ही प्रचंड वार ने बर्निंग हैंड की पोशाक को टुकड़ों में बिखेर दिया—
अब तुम्हारी बारी है, मुखौटा! मैं देखना चाहता हूं कि इस मॉस्क के नीचे कौन सा चेहरा छिपा हुआ है!
ओह, नागराज 'मुखौटा' की तरफ बढ़ रहा है! प्रोबॉट के 'बायोस्केन' के अनुसार मुखौटा के प्रोफेसर होने की संभावना बहुत ज्यादा है! मुझे नागराज को मुखौटा पर वार करने से रोकना होगा!
और उसके लिए मुझे 'सॉलिड बीम' की कैद से आजाद होना पड़ेगा! इसकी 'सॉलिड बीम' ने मेरी बेल्ट को ढक लिया है! अब न तो बेल्ट तक मेरे हाथ पहुंच सकते हैं, और न ही मेरी आवाज! लेकिन मुझे बेल्ट की जरूरत फिलहाल नहीं है! क्योंकि मुझे पकड़ने के चक्कर में यह 'सॉलिड बीम' मुझसे इस ठोस किरण द्वारा जुड़ गया है... और परमाणु ब्लास्ट छोड़ सकने वाले मेरे ब्रेसलेट अभी भी आजाद हैं!
इनकी मदद से मैं इस दीवार को गला कर इस कैद से छुटकारा पा सकता हूं!
और फिर इसी की बीम पकड़कर, इसको इतनी जोर से पटक सकता हूं कि इसके चिथड़े उड़ जाएं!

नागराज का कहर मुरबौटा पर टूट रहा था-
देख, देख उधर!
तेरे कारण दिल्ली पर आज कयामत टूट पड़ी है!
धू-धू करके जल रही है दिल्ली की इमारतें!
क्यों किया तूने ऐसा? बोल! क्यों किया?
मुरबौटा को हाथ मत लगाओ नागराज!
तड़ाक
जिस मुरबौटा के कारण तुम्हारे शहर पर कयामत बरस रही है, तुम उसी की जान बचा रहे हो?
वह इसलिए नागराज, क्योंकि इस शख्स की जान में परमाणु की जान बसती है! और वैसे भी ये कोई अपराधी नहीं, एक दिमागी मरीज है! जिनको मार की नहीं इलाज की जरूरत है!
आऽऽऽह! तुम ये क्या कर रहे हो परमाणु?
किसी खतरनाक पागल को खुला नहीं छोड़ा जाता परमाणु...
...और अगर तुमने इस खतरनाक अपराधी को बचाने की ठान ही ली है तो नागराज इस वक्त तुम्हारा भी दुश्मन है परमाणु!
ढिशूम

तुम मेरी पूरी बात सुने बगैर ही मुझ पर हमला कर रहे हो नागराज! मुखौटा को पकड़ने की धुन में तुम अपनी सोचने-समझने की क्षमता खो चुके हो! इसलिए मुझे जो कुछ भी तुमको बताना है, वह तुमको शांत करके ही बताना होगा!
बताने को बचा क्या है परमाणु?
यह तो स्पष्ट है कि मुखौटा चाहे जो भी हो, उसके इरादे विनाशकारी हैं! और विनाशकारी इरादे रखने वालों का विनाश कर देना ही न्याय है!
अगर तुम यही चाहते हो तो लो! कर दो इनका विनाश! खत्म कर दो इनको! वर्ना इनको बचाने के लिए कहीं मुझे अपने हाथ तुम्हारे खून से न रंगने पड़ें!
प्रोफेसर वर्मा! तुम्हारे रचयिता प्रोफेसर वर्मा! ये...ये मुखौटा हैं! लेकिन क्यों? और ये मुझे और साथ में तुमको भी क्यों मारना चाहते हैं?
मारने का तो मुझे पता नहीं! लेकिन इनकी इस हालत का कारण मैं तुमको जरूर बता सकता हूं!
परमाणु नागराज की प्रोफेसर के ऑपरेशन की कहानी सुनाता चला गया-
ओह! यानी ये अपने दिमाग में हो रही अजीबो-गरीब प्रतिक्रिया के कारण ऐसे हो गए हैं! तब तो इनको तुरन्त वापस अस्पताल पहुंचाने की जरूरत है!
यही तो मैं तुमको समझाना चाह रहा था नागराज!
अब उसका समय खत्म हो गया है मेरे बच्चो!

क्योंकि अब अस्पताल के मुर्दाघर पहुंचने की बारी तुम दोनों की है!
आऽऽऽह!
हे भगवान! यह तो मेरी ही पोशाक है! और ये हम पर हमला कर रही है!
इसकी चिन्ता मत करो! फिलहाल तो मुझे ये दिखाओ कि तुम लोग कब तक बचते रह सकते हो?
क्योंकि अब मैं रुकूंगा नहीं! एक के बाद एक हथियार लगातार पैदा करता जाऊंगा! देखते हैं कि तुम लोग कितनों से बचोगे और कब तक बचोगे?
प्रोफेसर ने इतनी जल्दी हवा में से ये पूरी पोशाक कैसे बना दी?
बचना तो अब तुझे पड़ेगा!
क्योंकि प्रोबॉट पहली बार फ्यूजन चैम्बर से बाहर निकलकर अपने फर्ज को निभाने आ गया है! परमाणु की मदद करने का फर्ज! जिसके लिए प्रोफेसर ने खुद प्रोबॉट की रचना की थी!
आऽऽऽह! ये कैसा खोल है! जो मुझे दबा रहा है! आऽऽऽ ह!
ये 'कॉम्पैक्टर रेज' का खोल है, प्रोफेसर!
प्रोफेसर के ही आविष्कार को न पहचान कर तूने मेरे शक को यकीन में बदल दिया है!

ये क्या कर रहे हो, प्रोबॉट? तुम प्रोफेसर पर हमला क्यों कर रहे हो?
अभी पता चल जाएगा परमाणु! जब यह अपने ऊपर पड़ रहे दबाव से बौखलाकर यह बड़ा रूप छोड़कर...
...अपने असली रूप में आ जाएगा! जादूगर शाकूरा के रूप में!
शाकूरा! ये तो शाकूरा है! लेकिन ये प्रोफेसर के अविष्कारों को कैसे पैदा कर पा रहा था?
मैंने अपने बायोस्कैन में इसकी भी आकृति देखी थी! इसी से मैं समझ गया कि ये प्रोफेसर के रूप में शाकूरा है!
क्योंकि तुम्हारा प्रोफेसर मेरे कब्जे में है! शाकूरा के कब्जे में! लेकिन उसे मैंने कहां पर छिपा रखा है, इसका पता लगाने के लिए तुमको दस जन्म और लेने पड़ेंगे!
जब तूने मेरी छिप और सोखूरा रत्न को नष्ट करके मेरी शक्तियां सीमित कर दीं, और मुझे भागने पर विवश कर दिया तो मैंने तुझे सबसे पहले खत्म करने की ठान ली! मुश्किलें दो थीं! एक तो मेरी जादुई शक्ति सीमित हो गई थी, और दूसरे जादुई शक्ति का इस्तेमाल करते ही मुझे ढूंढ रहे मेरे ग्रह के योद्धा मुझे धर दबोचते!
फिर मैं भी मौके की ताक में लगा रहा! और वह मौका मुझे तब मिला जब अगली सुबह मैं तेरा पीछा करता करता प्रोफेसर तक जा पहुंचा! पहले तो मैंने सोचा कि उसे खत्म करके तुझे तड़पाऊंगा, और तेरी तड़पन का मजा लूंगा!
लेकिन प्रोफेसर के दिमाग को नष्ट करने की कोशिश में मुझे उसके दिमाग में घातक हथियारों की अद्भुत जानकारी मिली! बस मेरा काम हो गया! मेरे पास इतनी जादुई शक्ति तो बची ही थी कि मैं उन आविष्कारों को जादुई शक्ति से बना सकूं!

तकनीकी ज्ञान, प्रोफेसर का दिमाग दे रहा था, और उनको ज्ञान के कणों से बना रही थी मेरी जादुई शक्ति। सुरबीटा का रूप तुम सबको भी भ्रम में डालने के लिए था, और मेरे दुश्मन जादूगर योद्धाओं को भी!
मेरा दिमाग अभी भी प्रोफेसर के दिमाग के संपर्क में है। मैं अभी भी उसमें से नए-नए आविष्कार पढ़ रहा हूं! और उनको बनाने से मुझे कोई रोक नहीं सकता। ये टीन का डिब्बा भी नहीं!
मुझे टीन का डिब्बा नहीं, प्रोबॉट कहते हैं शाकुरा! यानी प्रोफेसर का रोबोट! उनका अपना प्रतिरूप!
उन्होंने मेरे दिमागी सर्किट को भी अपने मस्तिष्क के अनुरूप ही बनाया है। जो तू प्रोफेसर का दिमाग पढ़कर जान रहा है, वह मैं भी जानता हूं! अगर तू उन आविष्कारों को बनाने का तरीका जानता है, तो मैं उनको तोड़ने का तरीका भी जानता हूं!
?
शाकुरा प्रोबॉट से उलझा हुआ था-
और नागराज तथा परमाणु, 'परमाणु पोशाक' से भिड़े हुए थे-
ये ड्रेस है- वह मेरी ड्रेस जैसी है नागराज! इसीलिए मेरा कोई भी वार इस पर असर नहीं डाल पा रहा है!
RAJ
ये पोशाक किस चीज की बनी है परमाणु? इस पर न तो मेरे ध्वंसक सर्प असर डाल पा रहे हैं और न ही तुम्हारे ब्लास्ट!

ये एस्बेस्टस और नाइलो-स्टील के तारों द्वारा बुनी गई ड्रेस है, नागराज! ठीक वैसे ही, जैसे होजरी या स्वेटर की बुनाई की जाती है। कोई भी वार इसको तोड़ने के बाद ही इसको पार कर सकता है। पहले नहीं!
बुनाई! तब तो मुझे इस पोशाक को नष्ट करने का तरीका सूझ गया है!
तुम इस पर लगातार वार करते रहो परमाणु! इसका ध्यान बंटाए रहो! इस दौरान मैं अपना काम कर लूंगा!
नागराज के सर्प परमाणु पोशाक पर जाकर लिपट गए—
और नागराज लड़ाई से अलग हट गया—
मेरा काम तो हो गया है! अब परमाणु का काम सिर्फ इतना सा है कि इसको दौड़ाता रहे! जितना दौड़ा सके, उतना!
परमाणु, परमाणु पोशाक को इधर-उधर उड़ाता चला गया—
और—
अरे! परमाणु-पोशाक कहां गई? कहां गायब हो गई परमाणु पोशाक! उसको तो कोई कैसे नष्ट नहीं कर सकता!
ये रही परमाणु पोशाक, ठाकुर! एक धागा खींच लिया तो तुम्हारी पूरी पोशाक उधड़ती चली गई!
बड़ी बेकार सिलाई है तुम्हारी!
तड़ाक

ये रहे परमाणु पोशाक की बेल्ट और ब्रेसलेट का चूरा! हवा से बनी चीज हवा में ही मिल गई!
फ़ककक्
हा हा! लेकिन तुम लोग मिलकर भी नष्ट होने से बच नहीं पाओगे! मुझे प्रोफेसर का दिमाग पढ़ने से कोई रोक नहीं सकता!
हम ये चाहते भी नहीं हैं कि तुम प्रोफेसर के दिमाग से अपना संपर्क तोड़ो! क्योंकि अगर तुम संपर्क तोड़ लोगे...
...तो फिर मैं ये कैसे कर पाऊंगा!
न जाने कैसे एक घुटी चीख के साथ शाकूरा का शरीर जड़ होता चला गया—
तुमने ये कैसे किया प्रोबॉट? शाकूरा तो पेड़ जैसा स्थिर हो गया है!
मैंने बताया था न कि मेरा दिमाग, प्रोफेसर के दिमाग का ही प्रतिरूप है! इसीलिए हम दोनों की मानसिक तरंगों की फ्रीक्वेंसी भी एक ही है!...
...बस, उसी फ्रीक्वेंसी की मदद से मैंने प्रोफेसर के दिमाग से संपर्क साधा...
...और प्रोफेसर के दिमाग के जरिए उससे जुड़े शाकूरा के दिमाग के सेलों पर मानसिक तरंगों का प्रहार कर दिया! यह भी प्रोफेसर का एक आविष्कार है। जिसमें अगर दिमाग एक दूसरे से जुड़े हों तो एक दिमाग दूसरे दिमाग पर प्रहार कर सकता है। अब इसी फ्रीक्वेंसी की मदद से हम प्रोफेसर को भी ढूंढ निकालेंगे!
लो, शाकूरा को उसके ग्रह ले जाने भी आ गए!
और फिर-अस्पताल में-
प्रोफेसर फिलहाल तो ठीक हैं परमाणु! लेकिन हमारे ऑपरेशन और शाकूरा के जादू ने इनके दिमाग पर क्या असर डाला है, यह तो आने वाला वक्त ही बता पाएगा!
मेडिकल साइंस नहीं!

समाप्त